उपयोगी कहानियाँ

लघुकथा संग्रह

डॉ.अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

उपयोगी कहानियाँ

लघु कथा संग्रह

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-52-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरु चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, **अजय पाण्डेय 'बेबस'**
मूल्य- 320/- रुपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY AJAY PANDEY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

रचना मेरे लिए केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है। गीत, ग़ज़ल, कविता, मुक्तक और कहानियाँ लिखने का मेरा मूल उद्देश्य लोक-जागरण के साथ-साथ अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना है। बदलते समय में जब शब्दों की सरलता और भावों की सच्चाई पीछे छूटती जा रही है, तब मेरी यह कोशिश रही है कि रचनाएँ सहज हों, भावपूर्ण हों और आम पाठक तक बिना किसी बोझ के पहुँच सकें।

मैंने सदैव यही चाहा है कि मेरी रचनाएँ पढ़कर पाठक केवल अर्थ ही न समझें, बल्कि उनमें छिपी संवेदना को भी महसूस कर सकें। जीवन के छोटे-छोटे अनुभव, समाज की सच्चाइयाँ, मानवीय रिश्तों की गहराई और लोकजीवन की धड़कन—इन सबको सरल शब्दों में प्रस्तुत करना ही मेरी लेखनी का स्वभाव रहा है। जटिलता से दूर, सीधी और आत्मीय भाषा में कही गई बात अधिक दूर तक जाती है—इसी विश्वास के साथ ये रचनाएँ सामने आई हैं।

यह पुस्तक केवल मेरा सृजन नहीं, बल्कि उन मूल्यों की अभिव्यक्ति है जो मैंने अपने जीवन में देखे, सीखे और जिए हैं। मेरी समस्त रचनाएँ मेरे स्वर्गीय पिता द्वारिकानाथ पाण्डेय एवं स्वर्गीय माता जगदंबा देवी की पुण्य स्मृति को समर्पित हैं। उनका संस्कार, उनका स्नेह और उनकी सीख ही मेरी लेखनी की वास्तविक प्रेरणा है।

आशा है कि यह कृति पाठकों के मन को छुएगी, उन्हें सोचने का एक नया दृष्टिकोण देगी और लोकहित में एक छोटा-सा सार्थक प्रयास सिद्ध होगी।

— अजय पाण्डेय 'बेबस'

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	एंटीबायोटिक	7
2.	नव -वर्ष	8
3.	कच्ची धूप	9
4.	डुबकी	10
5.	कोहरा	11
6.	मुस्कान की दुकान	12
7.	विरोध	13
8.	वो अमावस की रात	14
9.	बही खाता	15
10.	छोटी बहू	16-17
11.	समर्पण	18
12.	बलिदान	19
13.	अनोखी शादी	20-21
14.	तपस्या	22
15.	एक अनजानी यात्रा	23
16.	सपनों का शहर	24
17.	एक अधूरी कहानी	25
18.	मंथन	26
19.	अनहोनी	27
20.	पुरानी हवेली	28
21.	विरासत	29-30
22.	शोक	31
23.	पक्षपात	32-33
24.	दो जून की रोटी	34
25.	शिकायत	35 -36

26.	तपती धूप	37
27.	आत्ममंथन	38-40
28.	शक	41-42
29.	विडंबना	43
30.	विधि का विधान	44-45
31.	विकल्प	46-47
32.	बंधन	48-49
33.	अनजानी डगर	50
34.	नया दिन नई रात	51
35.	उलाहना	52
36.	तपस्या	53
37.	पीले चावल	54
38.	तर्पण	55
39.	पितृ दोष	56-57
40.	परिवर्तन	58
41.	माँ की विदाई	59
42.	पलायन	60
43.	अनुष्ठान	60
44.	सहनशीलता	61
45.	विडंबना	62
46.	होली का हुड़दंग	63
47.	अनुभूति	64

एंटीबायोटिक

01 अप्रील, शीला को पता नहीं था कि 01 अप्रील मूर्ख दिवस के रूप में मनाया जाता है।।

यदि शीला को जानकारी भी तो उस दिन शीला के पति और शीला के नंदोई का घर आगमन हो रहा था।। महीनों बाद शीला के पति अवधेश कंपनी से छुट्टी ले पंद्रह दिनों के लिये घर आ रहा था।

बहनोई रमेश को अवधेश ने साथ घर आने के लिये आमंत्रित कर दिया था।। रमेश जी भी साथ आ रहे थे।। घर में खुशी का माहौल था और शीला रसोई में व्यस्त हो अवधेश की पसंद के व्यंजन बनाने में लगी थी।।

इसी बीच मजाकिया अंदाज में शीला के देवर रिषु ने अपनी भाभी शिला से कहा!!!!- भाभी!! आपको पता चला कि नहीं!! भैया अपने साथ एक और भाभी व्याह कर ला रहे हैं। सुनते हैं वो बहुत सुंदर हैं।।

रिषु का यह बात सुन शीला को चक्कर से आ गये और वह धड़ाम से फर्श पर गिरकर मूर्क्षित हो गई।।

रिषु डर गया और अपनी माँ को बुला बैठा।। दौड़ आई सत्या ने अपनी बहू को मूर्क्षित देखा तो रिषु से कारण पूछा।। रिषु ने सब बता दिया।। 01 अप्रील को लेकर मैने भाभी से मजाक किया बस।। मुझे नहीं पता कि भाभी सदमें में आ जाएँगी।।

शिला के चेहरे पर पानी का छींटा मारा गया।। धीरे-धीरे शीला होश में आने लगी।। आँख खुलते ही सामने अवधेश को खड़ा मुस्कुराते पाई।।

अवधेश अपने बहनोई संग खड़ा था।। उसने रिषु के मजाक का सच बता दिया और कहा--अरे पगली!! तुम्हारे रहते मैं दूसरी शादी करूँ?? यह किसी भी जन्म में संभव नहीं है। 01अप्रील/मूर्ख दिवस क्या तुम्हे याद नहीं।।

अवधेश के मुँह से शीला के लिये निकले ये प्यार के दो शब्द मानो किसी बड़े घाव को भरने के एंटीबायोटिक जैसा साबित हुआ।। शीला फिर पुराने उत्साह में लौट आई।।

नव -वर्ष

अंग्रेजी कलेण्डर की पहली तारीख, पहली जनवरी को नये साल के रुप में मनाने के लिये शीला अपने मायके को आ गई। साथ में उसके बच्चे भी स्कूल से मिली दो अतिरिक्त दिनों की छुट्टी को पिकनिक के तौर पर गुजारने के लिये अपनी माँ के साथ ननिहाल आ गए।। जबकि शीला को पता था उसके पिता माधव दास जी पुरानी रीति रिवाजों से बाहर का सोच नहीं रखते थे।

उनके मुताबिक यानि सनातन परंपरा के अनुसार होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात चैत माह के प्रथम दिन को नया वर्ष मनाया जाता रहा है। पश्चिमि संस्कार के तहत पहली जनवरी को नये साल के प्रारंभ की बात से उनको खीज होती थी और आज के युवा पीढ़ी की अग्यानता पर सबको फटकारते रहते थे।।

अब जब घर में बेटी तथा नाती-नतिनी संग आए हैं तो उनका ख्याल रखना उनकी मजबूरी हो गई। बच्चों की खुशी का ख्याल कर माधव दास अपने शहर से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्राकृतिक फॉल दिखाने ले गये। खानै-पीने की सामग्रियाँ घर सै ही बनाकर ले गये थै।।

नये साल के जश्न में दूसरे शहरों के लोग भी जमा थे।। आधुनिक गीत संगीत के साथ साथ युवा युवतियों का नाच गान भी चल रहा था।। सभी आनंद विभोर हो अपने में मग्न थे कि सौ गज की दूरी पर जश्न मनाने आए लोगों में किसी बात को लेकर आपस में झगड़ा हो गया।।

शोर-गुल के साथ-साथ मार पीट भी होने लगा।। मालूम हुआ कि वे सभी नशे में थे।। गनीमत रहा कि पहले से तैनात प्रशासनिक पुलिस की एक टूकड़ी सुरक्षा के ख्याल से वहाँ थी। पुलिस ने हस्तक्षेप कर झगड़े को शांत कराया।। पिकनिक स्थल का यह रुप देख दूर या पास से आए और लोग तुरंत स्थान छोड़ चले।।

माधव दास को जिस बात का डर था वही होता देख अपनी बेटी को इस अंग्रेजी नये साल से दूर रह बच्चों को सनातन परंपरा में जीने की कला को सिखलाने की बात कही।। शीला भी समझ गई और फिर इस अंग्रेजी नये साल के जश्न को मन से निकाल दी।।

कच्ची धूप

समय से पहले खुद को परिपक्व मान लेना भी खुद को जलती अग्नि में कूदने जैसा ही होता है।।

एक घना जंगल! मादा बाघ अपने दो शावकों को लेकर ऊँचे किसी टीले में बैठकर आराम कर रही थी।।

उसके दोनों शावक नीचे मैदानी भाग में अपने शिकारी स्वभाव का प्रदर्शन कर खेल रहे थे।। दोनों शावकों का उम्र दो साल का हो गया था।।

इसी बीच भैंसों का एक झूंड उनके सामने से गुजरने लगा।।

शावकों की माँ मादा बाघ(बाघिन)आराम की मुद्रा में सिर नीचे कर बैठी थी, पर बच्चों की नजर भैंसों के झूंड पर पड़ गई।।

स्वभाव से उग्र और शिकारी जीव होने के कारण दोनों शावक अति उत्साहित हो बिना अपना उम्र और शिकार का अनुभव जाने भैंसों के झूँड में प्रवेश कर गये।।

भैंसों का झूंड भी एक बार तो सहम कर भागने लगी पर शावकों के आकार को देख उग्र स्वभाव वाले भैंसे भी उनपर आक्रमण कर घायल कर गये।।

भैंसों के रंभाने और शावकों को मार खाते देख बाघिन जल्दी से शावकों को बचाने दहाड़ लगाते दौड़ पड़ी।।

बाघिन की दहाड़ सुन भैंसों का झूंड भाग खड़ा हुआ।। गनीमत थी कि शावकों को कम चोटें आई थी।।

बाघिन ने बच्चों को*कच्ची धूप* यानि अपरिपक्वकता का मतलब समझाते हुए आगे से सावधान रहने की बात कही।।

डुबकी

रीतेश के सभी साथी इस बार के महाकुंभ में गंगा में डुबकी लगा आने तैयारी कर चूके थे।। रीतेश को भी साथ चलने के लिये जिद्द कर चले थे। रीतेश इस मौका को खोना नहीं चाहता था लेकिन रीतेश की माली हालत ठीक नहीं थी।

रीतेश के पिता ठेकेदार थे लेकिन विगत दो बर्षों से काम नहीं मिलने के कारण घर पर ही रह रहे थे।

इन दो सालों में उनकी जमा पूँजी भी समाप्त हो गई थी। चार आदमी को जो किराए पर घर दिये थे उसी किराये से घर खर्ची किसी तरह चला रहे थे।।

रीतेश को यह मालूम था।।

रीतेश दोस्तों को भी नाराज नहीं करना चाहता था।। रीतेश ने मदद के तौर पर अपने मामा श्याम बाबू से कुछ रूपये की मांग की।।

श्याम बाबू ने रीतेश की मंशा को समझ रीतेश को समझाते हुए कहा।। देखो रीतेश!!! तीर्थ यात्रा की अभी तुमहारी उमर नहीं हुई है। बेटा-मन को वैराग्य की ओर ले जाने से अच्छा है तुम जो बैंकिंग की तैयारी कर रहे हो उस पर ध्यान दो।।

तुम्हारे दोस्तों का क्या है? वो सभी व्यापारी परिवार से हैं। वो जहाँ जाएँगे वहीं से कुछ नई चीज लाकर बेचेंगे और अपनी यात्रा का खर्च निकाल लेंगे।।

तुम्हारा क्या? तुम्हारा तो सिर्फ खर्च होगा और फिर तुम्हें पैसे लौटाने की चिंता भी बढ़ जाएगी।। तुम्हार फिर पढ़ाई बाधित होगा।।

मेरी मानो तो *माँ बाप के चरणों में भी गंगा निवास करती हैं।। सेवा भाव की डुबकी में डूब तुम माँ बाप की सेवा करो, उनका सहारा बनो।। इससे बड़ा पूण्य और सुकूँ तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा।।

रीतेश को अपनी गलती का एहसास हुआ और फिर अपने मामा जी के कथनों में सत्यता को जान गंगा में डुबकी का ख्यास इस बार के लिये छोड़ दिया।।

कोहरा

मदनपुरा गाँव।

विनय बाबू अपने सरकारी काम से छुट्टी लेकर चार दिन की छुट्टी पर घर आए थे।।

सुबह का समय।

विनय बाबू की भार्या प्रमिला दो कप चाय के साथ विनय बाबू के बैठक वाली कमरे में आई और दोनों बैठकर चाय पीने लगे।।

चाय पीने के क्रम में ही प्रमिला ने अपनी बेटी रोशनी की बढ़ती उम्र का जिक्र कर शादी कर देने की बात विनय बाबू से कह बैठी।

विनय बाबू ने कहा! प्रमिला!!

बात तो तुम सही कह रही हो। रोशनी की उम्र हो गई है और समय पर बेटी को किसी योग्य लड़का और परिवार देख ब्याह कर देना चाहिये।।

पर तुम्हें मालूम है! मेरी नौकरी एक साधारण कर्मचारी में लिपिक पद की है। कम वेतन है मेरी और पुत्र रोहन को एम0बी0बी0 एस0 कराने में ही मेरा दम निकलता जा रहा है।

बैंक लोन की एम0आई0 भरते-भरते मेरे माली हालात बहुत बूरी है।। दो साल और एम0आई0 का ग्रह है। दो साल और रूकना ही बेहतर होगा।।

ये गरीबी का कोहरा है प्रमिला जो अपने समय पर ही छंटेगा।। हमें धैर्य से काम लेना है।। ईश्वर की कृपा होगी तो सब ठीक हो जायेगा।।

मुस्कान की दुकान

भैरव प्रसाद और उनकी पत्नी ऐश्वर्य की जिन्दगी पाकर भी हमेशा उदास रहने लगे थे। बुढ़ापा आ गया था और उन्हें घर के और बच्चों की चिंता सताए जा रही थी।

दोनों बैठ कर चाय पी रहे थे पर दोनों ही मौन होकर दूसरी दुनिया में खोए हुए थे।। भैरव प्रसाद जी की पत्नी सत्या की आँखों में तो आँसू आते दिख रहे थे।।

दरअसल उनकी चिंता का कारण उनके घर में नवजात किसी शिशुओं की किलकारी नहीं थी।

एकलौते पुत्र की शादी के चौदह साल हो गये थे और उनकी कोई संतान नहीं।। सभी के चेहरे से मुस्कान गायब थे।

हँसी ठिठोली को जाने हुए बर्षों गुजर गये थे। भगवान भी जैसे उस परिवार पर अपनी कृपा बरसाना भूल गये थे। चिंता की बात थी।

चूँकि वारिश जरूरी था।। कुछ वक्त गुजरा होगा कि उसी समय भैरव प्रसाद जी के सुपुत्र सैलेश का फोन आया।।

भैरव जी ने काँपते हाथों से कॉल रिसिव किया और फिर बेटे की तरफ से जो बात कही कही वह उनके जीवन का सबसे आनंददायी खबर थी।।

सैलेश ने मुस्कुराते हुए हर्षित मन से भैरव जी को दादा बनने की सूचना दी।। भैरव जी ने सत्या को खुशखबरी का बड़ा संदेश सुनाया।।

भैरव जी ने हँसते हुए सत्या जी से कहा----अब मेरे घर में मुस्कान की दुकान खुल गई है।।

हमारी आयू बढ़ गई तथा स्वास्थ्य भी जैसे जवानी वाली आ गई।। भैरव प्रसाद और सत्या जी के हर्ष का तो अब स्वरुप ही बदल चुका था।।

विरोध

किसी आवश्यक कार्य या फिर मुद्दे पर विरोध आम होता रहा है।।

देवसागर जी अपने पुत्र का ग्यारहवीं में नामांकन के लिये अपने ही शहर के एक नामी सरकारी स्कूल में कराने का विचार कर रखा था।।

प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण उनका पुत्र गौरव और देवसागर जी की पत्नी दूसरे बड़े शहर के स्कूल में पढ़ना/पढ़ाने की बात पर अड़े हुए थे।।

गौरव की माँ शब्या स्थानीय स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहती थी। देवसागर जी के निर्णय का विरोध कर रही थी। गौरव भी अपनी माँ की कही बातों पर हाँ में हाँ मिला रहा था।

देवसागर जी चाहते थे कि स्कूल या शहर सब तो एक है। क्या छोटा कि क्या बड़ा।।

गौरव अभी बच्चा है और कम से कम और पाँच साल गौरव को अपनी क्षत्रछाया से दूर नहीं करना चाहते थे।।

बहुत ऐसे बच्चों को देवसागर जी ने देखा है। जो बच्चे माँ बाप की देख रेख से बाहर हुए कि नशाखुरानी का शिकार हो गये हैं। पागलों की स्थिति उनकी और सुधार की कोई गुंजाईश नहीं है।।

बावजूद इसके शब्या और गौरव बाहर दूसरे शहर में जाने की जिद कर बैठे थे।।

लाचार हो देवसागर जी ने दूसरे शहर में गौरव का नामांकन करा दिया।। ग्यारहवीं के आखिरी बर्ष तक तो ठीक ठाक रहा। पर बारहवीं जाते ही कॉलेज से गौरव की शिकायतें आने लगी। गौरव!दोस्ती यारी में फँसकर नशे का आदि हो चुका था।।

देवसागर जी के विचारों पर शब्या का विरोध गौरव के भविष्य को बिगाड़ बैठा।।

वो अमावस की रात

सावन का महीना और वो अमावस की रात!

खूब जोरों की बर्षा हो रही थी और साथ ही बादलों की गरज संग बिदली की कड़कती चमक,मानो प्रलय आनेवाला हो जैसा पल!!

रात के ग्यारह बज रहे थे और सियाराम जी अपने परिवार संग कमरे में बैठे मौसम के शांत होने का इंतजार कर रहे थे।।

अचानक उसी समय उनके मुख्य द्वार पर थपथपाने की आवाज के साथ दरवाजा खोलने की आग्रह सुनाई पड़ी।

कोई बिचारा आँधी पानी में फँस गया होगा सोच सियाराम जी ने दरवाजा खोल अंदर आने को कहा ।

पर यह क्या?

जैसे ही सियाराम जी ने दरवाजा खोला-चार नकाब पोश घर के अंदर प्रवेश कर सियाराम जी के सीने में बंदूक तानते हुए कहा। हम लुटेरे हैं। चालाकी न दिखाकर तुम तिजोरी की चाभी दो। हम रुपया-जेवर लेकर चले जाएँगे। शोर किया या अन्य चालाकी दिखाई तो जान से हाथ धो बैठोगे।।

सियाराम और उनके परिवार सहम सा गये। तुरंत तिजोरी की चाभी दे दी।

करीब आधे घंटे तक लुटेरों ने घर परिवार को कब्जे में रखा और रुपये/जेवरात लूटकर चलते बने। अंधेरे में गायब हो गये।।

थाने में रपट लिखाई गई पर लुटेरे पकड़ से दूर रहे। और तब से वो अमावस की रात सियाराम राम जी के जिन्दगी को ही अमावस की रात वाली कर गई।।

बही खाता

जमीन में जी रहे जीवों के कर्मों का बही खाता ईश्वर संभाले रहते, पर जीवों में श्रेष्ठ जीव आदमी अपनी कमाई में क्या खोया, क्या बोया में क्या क्या पाया का हिसाब बही खाते में लिखकर रखता है।।

सामान्य आदमी को बही खाते से सरोकार नहीं रहता पर व्यापार, सरकारी लेन देन, में बही खाते का होना जरूरी है।। सामाजिक जीवन में आदिकाल से बही खाते का प्रचलन चल रहा है।।

बही खाते की आवश्यकता की महत्ता को समझाते हुए रामप्रसाद जी अपने व्यापारी पुत्र राहुल को बही खाते के उन पन्नों को उलटकर बता रहे थे जिन पन्नों में रामप्रसाद के पूर्वज कैसे आय-व्यय का अभिलेख लिख चला करते थे और उसी का अनुशरण रामप्रसाद जी भी करते आ रहे थे।।

राहुल को व्यापार में स्थिरता और स्थयित्व के लिये बही खाते का प्रयोग जरूरी बताया।

अपने परिवार के लम्बे समय से व्यापार में बने रहने और उन्नति का वास्तविक अर्थ को समझने में देर नहीं लगा।।

अपने पूर्वज और व्यापारी पिता रामप्रसाद जी की कही बात और बही खाते का सही मतलब समझने के बाद राहुल भी उसी का अनुशरण कर आज शहर के बड़े व्यपारियों में गिना जाने लगा।।

राहुल को बही खाते का मतलब समझ में आ गया।।

छोटी बहू

आज से तीस साल पहले की बात है। अजय अपनी माँ के पास बैठा घर परिवार की बातों में कुछ पुरानी बातों को लेकर चर्चा कर रहा था।।

माँ बस हाँ में हाँ मिला रही थी लेकिन कोई और जवाब नहीं दे रही थी। माँ गाँव छोड़कर अजय के साथ शहर में रहने लगी थी।।

अजय ने बात करते करते जैसे ही चुप्पी पकड़ा कि माँ ने अजय से कहा। दुर्भाग्य से समय से पहले तुम्हारे पिताजी इस दुनिया को छोड़ गये। तुम सब मेरे चार पुत्र हो और सबसे छोटे का अभी तक शादी नहीं हुई है। मैं जीते जी छोटे का शादी हो जाना देखना चाहती हूँ।

बड़ा लड़का/बड़ी बहू ने इस जवाब देही से इंकार कर दिया है। बड़े के बाद तुम बड़ा हो और यह जवाब देही लो।

अजय ने कहा- माँ! आपका आदेश सिरोधार्य है लेकिन छोटे अभी बेरोजगार है। कहीं काम नहीं लगा है। मैं उसके लिये एक दवा की दूकान खोल देने का विचार किया है। वह व्यापार करेगा।।

अजय ने अपनी माँ से यह कह चुप हो गया।। समय देख छोटे के लिये दवा की दूकान खोल दी गई। दूकान भी अच्छा चलने लगा।

दूसरे साल छोटे की शादी भी कर दी गई।

शादी के एक सप्ताह के बाद एक दिन अजय, छोटे और मंझली, छोटी सभी बैठ परिवार के उत्थान की बात कर रहे थे।।

सबने अपना तरीका या सलाह दिया पर छोटी बहू चुप रही। छोटी बहू की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।।

किसी तरह साल भर परिवार में शांति बनी रही। छोटी बहू भीतर से क्या खीचड़ी पका रही थी वह अजय को मालूम न था।।

एक दिन अजय ऱविवारीय छुट्टी का आनंद घर पर ही उठा रहा था। कुछ देर हुआ कि छोटी बहू चाय लेकर अजय को देने आई फिर चाय देकर खड़ी ही रही।

अजय ने पूछा--कुछ कहना है क्या बेटा?

छोटी बहू ने कहा!!

हाँ भैया जी!

अजय-बोलो!

बेहिचक छोटी ने कहा! भैया जी मैं आप सब के साथ नहीं रह सकती। मेरे लिये एक अलग घर ढूँढ दीजिये। मैं अपने पति के साथ अलग रहूँगी।

अजय ने छोटी से कहा--क्या किसी से झगड़ा हुआ है या फिर तुम्हें हम सब पसंद नहीं आ रहे?

छोटी बहू--मैं आपके सवालों का जवाब नहीं दे सकती। मुझे अलग रहना है तो अलग रहूँगी।।

अजय ने सांस गहरी लेकर कह दिया-ठीक है। तुम जैसे में खुश रहो वही होगा। पर माँ के रहते तो तुम्हे यह नहीं सोचना था।

छोटी बहू ने कहा!!- वो आपका मामला है। मैं किसी और को नहीं रख सकती।

अजय की आँखों में बेबसी के आँसू टपक चले और फिर दूसरे सप्ताह छोटी बहू और भाई के लिये एक भाड़े का घर ढूँढ शिफ्ट कर दिया।।

अजय आज भी उन पलों को याद कर रोता रहता है और कहता है- काश हर माँ बाप अपनी संतानों को पारिवारिक दायित्वों की अच्छी शिक्षा देते तो यह दिन किसी को देखना न पड़ता।।

समर्पण

भागवत शर्मा!

सरकारी शिक्षक कार्य से सेवा समाप्ति के बाद घर में ही रहने लगे थे। उनके दो बेटे थे और दोनों ही नेशनल बैंक में काम करते थे ।

शर्मा पुत्र दोनों अलग अलग शहरों में नियुक्त थे तथा अपने अपने परिवार को लेकर रह रहे थे। किसी बड़ी छुट्टियों में घर आकर माँ-पिता के संग रहा करते थे। कुल मिलाकर परिवार खुशहाल था।।

बच्चों के चले जाने के बाद शर्मा जी अपनी पत्नी संग फिर अकेले हो जाते थे। नौकरी रहने तक उनकी व्यस्तता बहुत थी और अब वही व्यस्तता का समाधान ढूँढ रहे थे।।

शर्मा जी की पत्नी ने उनको सलाह दिया।। मेरा कहा सुनियेगा तो एक सलाह दूँ। आप व्यस्त भी रहेंगे और मस्त भी रहेंगे।।

शर्मा जी ने पत्नी को कहा--कहो! क्या सलाह है तुम्हारी?

श्री मती शर्मा ने शर्मा जी से कहा! आपका ताल्लुकात स्कूल और स्कूल के बच्चों से रहा है। भीड़ में रहने, काम करने और मुस्कुराने की आदत रही है। मेरी मानो तो तुम्हें जो ग्रेच्यूटी के रूपये मिले हैं उसका उपयोग स्कूल में करो।

हमारे गाँव में अतिरिक्त जो चार एकड़ की जमीन है जो यूँ ही पड़ी है। गरीबों के लिये एक स्कूल खोल दो और उसका देख रेख करो।

गरीबों बच्चों का कल्याण और आपकी व्यस्तता दोनों सार्थक हो जाएगा।।

श्री मती शर्मा का यह सुझाव शर्मा जी को भा गया।

शर्मा जी गाँव गये। गाँव वालों से आपनी बात रखी। गाँव वाले हर्षित हो उठे तथा शर्मा जी के इस समर्पण भाव से गद गद हो बैठे।।

बलिदान

मानवीय जीवन में तो अनेक बलिदानियों की प्रेरक कथाएँ हैं जिसे पढ़कर हम गर्व महशूस करते हैं। पर अन्य जीवों में भी खुद का बलिदान देकर अपनी नई पीढ़ी का बचाव करते रहे हैं।

बलिदान की यह कहानी किसी एक गाँव की है। एक पीपल के पेड़ में बहुतायत में चमगादड़ों का बसेरा था। वहीं पास के आम पेड़ में बड़े मधुमख्खियों का बसेरा था।। सभी अपने परिवार बीच चैन से रहा करते थे। ऱाहगीरों का नजर उनपर पड़ता भी था तो वो उन्हें छेड़-छाड़ नहीं करते।

बर्षों गुजर गये उस बगीचे में अमन चैन व्याप्त थे। होनी को कौन टाल सकता है? जो होना रहता वह हो के रहता है।।

एक दिन रात में एक चमगादड़ गलती से मघुमख्खियों के झूंड से जा टकराया। गुस्सैल प्रवृति की मख्खियाँ। सुबह होते ही चमगादड़ों पर झूंड में टूट पड़े।

चमगादड़ अपनी जान बचाने के लिये इधर-उधर उड़ भागने लगे।

इस बुरी परिस्थिति में युवा चमगादड़ों को बचाने के लिये बूढ़े जितने चमगादड़ थे वो सभी पेड़ों में लटके रहे।।

मघुमख्खियों ने आपना सारा खीज उन बूढ़े चमगादड़ो पर उतार उन्हें बींध डाला। सैकड़ों बूढ़े चमगादड़ प्राण गंवा बैठे।।

बचे चमगादड़ों को समझ में आ गया कि मूर्खों की बस्ती में जाना और मनाना कितना कठिन होता है। ऐसे जाहिल और नासमझ जीवों से दूरियाँ ही बचाव है।।

बूढ़े चमगादड़ों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया, बल्कि चमगादड़ सभी वह स्थान छोड़ दूसरी जगह बसेरा बना लिये।।

अनोखी शादी

कैसे हैं बाबूजी कहते हुए सौरभ ने श्यामा जी का पैर छूकर प्रणाम किया फिर बगल रखी हुई कुर्सी पर बैठ गया।।

श्यामा जी ने हल्के मन से अच्छी ही हूँ कहकर सौरभ को जवाब दिया और फिर अपनी पत्नी से सौरभ के लिये चाय लाने को कहा।

श्यामा जी माधोपुर गाँव के प्रतिष्ठित आदमी थे तथा सरकारी शिक्षक से सेवा निवृति के बाद अपने गाँव के घर माधोपुर में ही रहने लगे थे।

सौरभ श्यामा जी का पढ़ाया हुआ छात्र आजकल किसी बैंक में नौकरी कर रहा था। देखने में स्मार्ट और सज्जन स्वभाव का सौरभ छुट्टी पर घर आया हुआ था। फुर्सत पाकर आज अपने गुरुदेव से मिलने आया था।

अपनी चुप्पी तोड़ते हुए सौरभ ने श्यामा जी की पुत्री शिल्पी का हाल चाल पूछ बैठा।

शिल्पी जो कि सौरभ की क्लास मेठ रही थी। सौरभ के बाहर रहने से मुलाकात नहीं हो पाए थे।

श्यामा जी ने सौरभ से कहा- शिल्पी बेटी ठीक ही है। कहीं सरकारी नौकरी नहीं मिली तो एक प्राईवेट स्कूल में पढ़ाने जाती है। जहाँ तक बेटे का सवाल है तो वह विदेश में नौकरी करता है और वह वहीं शादी कर घर बसा लिया है। हमारा खोज बीन नहीं करता।

मैं भी बीमार रहने लगा हूँ। पेंशन से घर चल रहा। बेटे की पढ़ाई में सारी जमा पूंजी खत्म हो गई है और अब शिल्पी के ब्याह में दिक्कत हो रही।

आधुनिक समाज में योग्य लड़कों के लिये बहुत ज्यादा तिलक दहेज की मांग है। मैं पूरा कर नहीं सकता। क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा।।

अपने गुरुजी की दर्द भरी बातें सुन सौरभ के आँखों से आँसू छलक गये। फिर सौरभ ने अपने गुरुजी से कहा।। आप शिल्पी के लिये लड़का देखिये। शादी कैसे होगी वो हमपर छोड़िये।।

श्यामा जी एकटक सौरभ को देखने लगे। फिर कहा!! मुश्किल है बेटा। समाज में जो दहेज दानव है वह मुझे असमर्थ बना रखा है। समाज की मांग को पूरा करने में असमर्थ हूँ।

सौरभ ने श्यामा जी से कहा? आप धन दहेज की चिंता न कर लड़का देखिये। बाकी मैं देख लूँगा।

श्यामा जी ने सौरभ से कहा!! बुरा न मानो तो तुम ही कोई लड़का देख शिल्पी का भाई बन बिदा करो।। जो मेरे पास शेष धन है वह तुम्हे दे दूँगा।।

सौरभ ने हामी भरी और श्यामा जी से पुन:आशीष ले चला गया।।

दूसरे महीने जब सौरभ श्यामा जी से मिलने आया तो सौरभ के साथ एक और स्मार्ट लड़का साथ में आया।

लड़के का नाम विजय था।

सौरभ ने श्यामा जी को उसका परिचय कराते हुए कहा। यह विजय है। मेरे साथ यह भी बैंक में काम करता है। कार दुर्घटना में इसके माँ बाप मारे गये हैं।

इसे योग्य लड़की की तलाश थी और शिल्पी से ज्यादा कोई और योग्य लड़की मेरी नजरों में नहीं है। आप अनुमति दें तो विजय को शिल्पी से भी मिला दूँ।

श्यामा जी को और क्या चाहिये था। उन्होनें अनुमति दे दी।

विजय और शिल्पी भी मिले । एक दूसरे को पसंद भी कर लिये।

अप्रेल माह में विजय और शिल्पी का ब्याह हो गया। माधोपुर के हजारों ग्रामीण मिलकर इस साधारण शादी को अनोखा बना दिया।

गाँव वालों ने बिन मांगे शिल्पी के नाम सभी घरेलु सामग्रियों का दान किया तथा पूरे गाँव वालों ने विजय का खुद बाराती बन खुद का स्वागत किया। शादि संपन्न हुई।

शिल्पी की विदाई भी हो गई। यह अनोखी शादी-सालों तक चर्चे में रही।।

तपस्या

मालती अपने नये पौत्र/पौत्री के आगमन के लिये सालों से इंतजार कर रही थी।

मालती के बेटे की हुई शादी के बारह साल यानि एक युग का अंत हो गया लेकिन घर में पौत्र या पौत्री के रूप में बच्चों की किलकारी से घर खाली था।

बहुत चिकित्सा और ज्योतिषीय सलाह अनुकूल होने के बावजूद बहु को कोख खाली ही रहा।

मालती रोज के रोज भगवान से दुआ मांगती,मंदिर-मंदिर मन्नत मांगती रही। मालती के लिये मानों उसकी दिनचर्या एक तपस्वी की तरह हो गई थी।

निराशा की चरम सीमा में बैठी मालती को एक दिन सुबह-सुबह ही बेटे का फोन आया। बेटे ने बड़ी खुशखबरी के रूप में बहू को पेट से रहने की बात बताई।

मालती की खुशी का तो ठिकाना नहीं था। मालती के बारह सालों की तपस्या का फल जो मिलने जा रहा था। मालती यह बात अपने पति ललित जोशी जी को बताई। ललित जी भी प्रसन्न हो उठे।

दूसरे दिन मालती अपने पति के साथ मंदिर गई और भगवान का धन्यवाद कर मन की खुशी को भगवान से साझा किया ताकि आगे किसी तरह की कठिनाई न आए।

मालती का भगवान के प्रति अटूट विश्वास और तपस्या सफल हुई।। जिन्दगी के कुछ और दिन बढ़ गए।।

एक अनजानी यात्रा

बहुत दिनों से उदासी का जीवन जी रहे रामनारायण जी आज सुबह जल्दी उठ गये। शौच क्रियादि बाद वो स्नान भी कर लिये।

अपने पिता के आज नये बदलाव को देख रमेश ने अपने पिता से पूछा। क्या कहीं बाहर जाना है आपको पिताजी? देर स्नान करने की आपकी आदत रही है पर आज सुबह ही सब कर लिये।

रामनारायण जी ने रमेश से कहा। हाँ बेटा। बाहर ही जाना है। तुम्हारी माँ के स्वर्गवासी होने के बाद से मन बिचलित रहने लगा है। मन की शांति और तुम्हारी माँ की आत्मा की शांति के लिये अब मैं रोज सुबह दो घंटों के लिये मंदिर में समय गुजारना चाहता हूँ।

रमेश ने कहा! ठीक है पिताजी। आपकी इच्छा।।

रामनारायण जी फिर घर से निकल गाँव के ही माँ दुर्गा के मंदिर में रोज बैठने लगे। अद्भुत शांति का अनुभव उन्हें मिलने लगा। महीनों गुजर गये। रामनारायण जी मंदिर जाना छोड़े नहीं।

रविवार का दिन। रामनारायण जी माँ दूर्गा को प्रणाम कर मंदिर परिसर में बैठे ही थे कि गाँव का उनका पुराना दोस्त राघव उनको देख हर्षित हो उठा। झट से राघव जी भी रामनारायण जी के पास बैठा और दोनों एक दूसरे का हाल चाल पूछ जान लिया। राघव जी भी सेवा निवृति के बाद गाँव में ही रहने का फैसला कर आ गये थे। राघव जी ने रामनारायण जी से कहा भी कि चलो हम दोनों मिलते रहेंगे तो दिन अच्छे से कट जाएँगे।

पुरानी नई बातों में दोनों उलझे रहे फिर अचानक राघव ने रामनारायण से पूछा।। रामनारायण!! तुम अकेले मंदिर आते हो। कभी कभी भाभी को भी लाया करो। बहुत दिन हुए भाभी से मुलाकात नहीं है।

रामनारायण जी जोर से स्वास लेकर कहा। राघव! अब भाभी से मुलाकात यार नहीं हो पाएगी। तुम्हारी भाभी- अनजान और अनन्त यात्रा पर निकल गई है। दो साल हो गये।। और यह कहते रामनारायण जी के आँखों आँसू आ गये।।

सपनों का शहर

त्रिलोचण शर्मा! प्राईमरी स्कूल के टीचर अपने छोटे से परिवार को लेकर गाँव के ही प्राईमरी स्कूल में एक सफल टीचर के रूप में पढ़ाते रह गये।

गाँव के लोग उनके आदर्श जीवन शैली से बहुत प्रभावित रहा करते थे और गाँव के किसी विशेष समस्या के समाधान हेतु उन्हीं से परामर्श लिया करते थे।

गाँव छोटा ही था पर आवश्यक सभी सुविधाएँ जैसे बिजली,पानी और स्वास्थ्य उपकेन्द्र की व्यवस्थाएँ मौजूद थीं।

इन सुविधाओं को मुहैया कराने में त्रिलोचन जी ही सरकार से पत्राचार करते रहते जिसका लाभ गाँव वालों को मिला।

त्रिलोचन जी का सुपूत्र भाष्कर जवाहर नवोदय विद्यालय से बारहवीं कर पूणे में सॉफ्टवेयर कि इंजीनियरिंग का डिग्री ले रहा था।

त्रिलोचण जी से अलग भाष्कर के मन में किसी बड़े शहर में रहने का था,जो उसके सपनों के शहर जैसा हो।

समय बीतता गया और भाष्कर को उसके इंजीनियरिंग के अंतिम बर्ष में ही अमेरिका के एक बड़े आई0टी0 कंपनी से नौकरी के लिये ऑफर लेटर आ गया।

मेघावी छात्र रहा भाष्कर बहुत खुश हुआ।।

इसी बीच एक महीने बाद उतराखंड भारत से भी एक ऑफर लेटर मिला।

इस बार तो भाष्कर और भी खुश हुआ कि अमेरिका से भी बड़े पैकेज पर जब भारत में ही काम मिल रहा तो वह अमेरिका क्यूँ जाए?

उतरखंड तो ऐसे भी बहुत सुंदर राज्य है और फिर उसे सपनों का शहर नैनीताल के साथ साथ सपनो का राज्य भी मिल रहा था।।

कोर्स पूरा होते ही भाष्कर नैनीताल में ज्वॉयन कर लिया और देश सेवा में लग गया।।

एक अधूरी कहानी

+2 हाई स्कूल। +2 टीचर संजय शर्मा अपने ही कलिग महिला शिक्षिका को दिल दे बैठे थे।

महिला शिक्षिका रश्मि संजय जी के इस भावना से अनभिग्य थी।

मौका देख संजय जी रश्मि से अपने दिल की बात कहना चाहते थे। पर एक अंजाना भय कि और शिक्षक शिक्षिका मेरी भावना को जान लेंगे तो क्या होगा?

संजय और रश्मि दोनों ही अविवाहित थे। जोड़ी भी सुंदर।।

दो साल और गुजर गये संजय जी रश्मि से अपने मन की बात कर न पाए।

कभी कभी रश्मि को भी संजय जी की आँखों में अपने लिये खूब अपनत्व का भाव देखती थी लेकिन शादी जैसी बातों से दूर रहती थी।

एक दिन अचानक संजय शर्मा के किसी दूसरे शहर में स्थानान्तरण का पत्र विद्यालय को प्राप्त हुआ।

मजबूरी में संजय को दूसरे विद्यालय में योगदान देना पड़ा।

रुआँसे मन से संजय को सरकार के आदेश का अनुपालन करना पड़ा और साथ ही विद्यालय परिवार भी भावुक मन से संजय जी की विदाई किये।

इधर संजय जी अपने मन की बात रश्मि से न कर पाने के कारण अत्यंत उदास रहने लगे और रश्मि को अपनी भार्या बनाने की उनकी चाहत एक अधूरी कहानी बनकर रह गई।।

मंथन

देश के सभी राज्यों, जिलों, कस्बों में आज युवा नशे का शिकार होकर खुद को बर्बाद कर चले हैं।

युवाओं में नशा एक तबाही के रूप में समाज को खोखला कर चल रहा है।

नशे के शिकार युवाओं को कैसे नशे के गिरफ्त से निकाला जाये यही सोचकर मैनपुर जिले के मेयर आशुतोष जिले के कुछ और पदाधिकारियों से बैठक कर मंथन कर रहे थे।

मेयर आशुतोष ने सभी अधिकारियों से कहा-युवाओं में नशा खुरानी एक विषाक्त कैंसर की तरह फैल गया है। आप, जिले के सभी पदाधिकारी से आग्रह है कि आप अपने स्तर से इस नशे के खिलाफ मुहिम चलाने का कोई रास्ता निकालें।

नशे की तस्करी करने वालों को आजीवन कारावास का डर दिखाएँ। नशे का एंटी डोज विकसित करें। युवाओं से सामूहिक वार्तालाप कैसे हो उसकी व्यवस्था करें।

नुक्कड़ नाटक और अन्य कोई तरह से स्कूलों में जाकर बच्चों को नशे का दुष्परिणाम को बताएँ।

मेयर के इस सलाह को सभी पदाधिकारियों ने अमल में लाने का संकल्प लिया और इस विचारणीय विंदुओं पर अभियान चलाने का निर्णय लिया।

अंत में राष्ट्र गीत के साथ बैठक की समाप्ति की गई।।

अनहोनी

जैसे ही घर से निकले,श्याम बाबू कि उन्हें छींक आ गई।

श्याम बाबू का बाहर निकलते छींक आना सुनकर, श्याम बाबू की पत्नी मधु ने श्याम बाबू को थोड़ी देर घर में रूककर जाने को कहा।

श्याम बाबू ने पलट कर मधु से कहा- तुम्हें तो हर बात पर अपसकून नजर आने लगता है। भला मुझे छींक ही तो आई है जो एक सामान्य बात है।

हर बात पर आशंका जाहिर करना तुम्हारी यह आदत ठीक नहीं है। इसे छोड़ो। श्याम बाबू मधु को यह कहकर बाहर शहर को निकल गए।।

शहर पास ही था तो श्याम बाबू स्कूटी लेकर निकले और जल्द आने की कह गए।।

इधर मधु किसी अनहोनी को लेकर चिंतित थी। अपसकुन जैसे बातों पर मधु बहुत विश्वास रखती थी। खैर जो हो?

जल्दी आने की कह श्याम बाबू बहुत देर हो जाने के बाद भी नहीं लौट पाए थे। यह मधु को चिंता बढ़ा रही थी।

दो घंटे और वक्त गुजरे होंगे कि शहर के अस्पताल से मधु को फोन आया। अस्पताल के कर्मचारी ने मधु को अस्पताल आने को कहा। अस्पताल का नाम सुनते ही मधु काँपने लगी और किसी बड़ी अनहोनी से डर गई। जल्द से उसने टेंम्पो बुलवाया और अस्पताल पहुँच गई।

अस्पताल में उसके पति श्याम बाबू के दाहिने हाथ में पलास्टर चढ़ चुका था। मधु श्याम बाबू के इस हालत को देख रोने लगी। श्याम बाबू ने फिर बताया। चुप रहो। हाथ में हेयर क्रेक है। सप्ताह भर में ठीक हो जाऊँगा।।

हुआ यूँ कि श्याम बाबू शहर से घर लौट ही रहे थे कि सड़क में एक कुत्ते का अचानक स्कूटी से टकराने पर नियंत्रण बिगड़ा और श्याम बाबू गिर गये। हाथ के बल गिरे तो दबाव में हाथ पर हेयर क्रेक हो गया।।

अस्पताल से मधु पति को लेकर घर आ गई पर छींक को लेकर जो अनहोनी की आशंका मधु के मन में थी वह मधु के हिसाब से सच हो गई।।

पुरानी हवेली

सैकड़ों साल पहले की बात है, क्रूर राजाओं की क्रूरता से जनता और खुद को बचाने के लिये सुदर्शन साह ने चारों ओर पहाड़ियों से घिरा स्थान ढूँढ़ नगर बसाया।

इस नये नगर से ही राजा राज्य के काम काज को संभालने लगे। नगर की और राजमहल की सुरक्षा में राज्य के कुछ सैनिक हमेशा पहाड़ियों पर हथियारों के साथ मुस्तैद रहते थे तथा दूरबीन से दुश्मनों की गतिविधि पर नजर रखने लगे थे।

सैनिकों की मुस्तैदी और गुप्तचरों की सावधानी से फिर कभी उस नवरत्न गढ़ राज्य में बाहरी दुश्मन हावी नहीं हो पाए। राज्य की प्रजा उन्नति करने लगे एवं राज्य का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया।

कलांतर में राजशाही की समाप्ति हुई और लोकतांत्रिक सरकारें बनने लगीं। राज परिवार के लोग भी विभिन्न शहरों में अपना ठिकाना बना लिया।

राज परिवार की हवेलियाँ राष्ट्रीय धरोहर के रूप में आज भी पुराने समय के इतिहास को संजोए हुए खड़े हैं।

नवरत्न गढ़ की हवेलियाँ भी आज लोगों के लिये कौतूहल और पर्यटन दर्शन का विषय बनकर खड़े हैं तथा भारतीय जीवन शेली की कहनियों को बयां कर रहे।।

विरासत

भैया! ऱामपाल ने अपने बड़े भाई शिवपाल को आवाज दिया।

किसी बात को लेकर कहीं खोये हुए शिवपाल को रामपाल की आवाज ने चौंका दिया।

शांत मन से फिर शिवपाल ने राम पाल से कहा। कहो छोटे! क्या बात है? तुम थोड़ा बेचैन भी दिख रहे हो। कहीं बहु या भाभी से झगड़े तो नहीं हुए?

ये सवाल पूछकर शिवपाल ठहाका लगाकर हँस पड़े।

रामपाल ने कहा! नहीं भैया ऐसी कोई बात नहीं है। आपके दिये संस्कार हैं! मैं भला बड़ों से क्या मुँह लगाऊँ या फिर छोटों को डराऊँ!

शिवपाल ने कहा! सही बात कह रहे हो। हमारे परिवार में हमें बड़ों ने जो संस्कार दे छोड़ा है उसे बनाए रखना हमारा फर्ज बनता है।।

खैर छोड़ो यह बात। तुम जो कुछ कहना चाह रहे थे वो कहो।। पैसे की जरूरत है या कुछ और?

रामपाल- नहीं भैया!आपके आशीर्वाद से अच्छी नौकरी में हूँ। पगार भी अच्छी है। मैं खुश हूँ भैया।।

शिवपाल-फिर क्या बात है?

रामपाल ने सिर झुकाकर और हृदय में पत्थर रखकर कहा। दरअसल भैया! मैं अपना परिवार अलग रखना चाहता हूँ। मैने शहर में एक मकान देख रखा है वह विकाऊ है।

मेरी नौकरी के अभी पाँच साल ही हुए हैं तो पैसा जमा नहीं हो पाया है जिससे मकान खरीद पाऊँ।

मैं चाहता था गाँव के कुछ जमीन को मेरे नाम कर देते, या फिर बंटवारा कर देते तो मैं अपने हिस्से की जमीन बेच घर खरीद लेता।।

रामपाल की बातों को सुनते ही शिवपाल के आँखों में आँसू आ गये।

स्थिर मन से तब शिवपाल ने रामपाल से कहा! देखो राम पाल! मेरे तो कोई संतान नहीं हैं और न आगे होना है। मैने तुम्हें ही बेटे के रूप में देखा है,परवरिश कर

आगे बढ़ाया है। अब जब मैं सेवानिवृत होकर तुम्हारे भरोसे जीना चाहता हूँ तो तुम मुझसे अलग होना चाहते हो। मेरे बाद तो सारा जायजाद तुम्हारा ही होगा और है भी।

बेशक तुम शहर में रहो। मैं अपनी कमाई हुई दौलत तुम्हें देता हूँ। तुम घर खरीद लो। मगर मेरे भाई रामपाल!! जमीन पूर्वजों का दिया वसीयत है। वसीयत को संजोया जाता है न कि उसे बेचा जाता है।।

अपने बड़े भाई शिवपाल की इस दरियादिली पर रामपाल रो बैठा। अपने बड़े भाई के पाँव में गिरकर क्षमा मांग फिर से यह गलती न करने की कसम खाई।

रिश्तों का यह वसीयत भी उत्तम संस्कारों के चलते बच गया।।

शोक

बाबूलाल जी शोकाकुल होकर घर के बाहर बरामदे में बैठे थे। सुबह से उन्होने चाय नाश्ता भी नहीं किया था। आँखों में आँसु और बहुत टूटे दिल से पेड़ पौधों को निहार संतुलित होने का प्रयास कर रहे थे।

सुबह का वक्त था। अचानक शशि शर्मा जो बाबूलाल जी के परम मित्र थे घर पर दस्तक दी।

बाबूलाल जी की आँखें लाल थी और आँसुओं से भरी सूजी हुई ।

शशि जी को कुछ न समझ में आया। आखिर बाबूलाल जी को क्या हुआ है जो रो रहे। हिम्मत करके शशि जी ने बाबूलाल जी से उनके दुख का कारण पूछा।

बाबूलाल जी ने रूहाँसे मन से पहले तो शशि जी को कुर्सी देकर बैठाया फिर खुद भी दूसरी कुर्सी में बैठ गये। बोझिल मन से बाबूलाल ने अपने दुख का कारण बताया।

दरअसल, बाबूलाल जी का एक पालतू कुत्ता टॉमी था। स्वामिभक्त वह कुत्ता कई एक बार चोरों से घर की रक्षा कर चुका था। परिवार के सभी लोग जिसमें खासकर बाबूलाल जी का उस कुत्ते पर बहुत स्नेह था।

बाबूलाल जी के साथ रहना, घूमना और कहीं बाहर जाने पर बाबूलाल जी के लौटने का इंतजार करना ये काम टॉमी के दिनचर्या में शामिल थे।

बाबूलाल ने शशि जी से कहा। कल शाम सर्प के डसने से टॉमी की मौत हो गई। मुझे लग रहा मेरी मौत हो गई है। ऐसा विश्वासी जानवर मैंने इंसानों में नहीं देखा।। टॉमी के गुजर जाने का जो सदमा लगा है उससे निकल नहीं पा रहा।

शशि जी मैं क्यों न रोऊँ? लगता है जैसे मेरा एक साथी मुझे छोड़ गया है। दिनभर साथ देने वाला मेरा दिल कहीं दूर चला गया जो अब नहीं आएगा।।

शोकाकुल हम सभी हैं पर यह शोक मुझे पल पल मार रहा है।। क्या करूँ? मेरे लिये वह जानवर नहीं बल्कि दिल का हिस्सा था।।

यह कहकर बाबूलाल जी फफक कर रो पड़े।।

पक्षपात

चंदौली गाँव। सुबह-सुबह ढोल पीटकर गाँव वालों को किसी मामले को लेकर होने वाली पंचायत की जानकारी दी गई।

गाँव के सरपंच गौरी सिंह द्वारा गाँव वालों के बीच गाँव वालों की रायसुमारी से फैसला सुनाना था।

दरअसल एक मामला सरपंच के पास शिकायत के तौर पर आया था। रामलाल ने अपने बंटवारे की जमीन से एक बीघा अधिक जमीन अपने भाई श्यामलाल का हड़प लिया था और शिकायत कर्ता श्यामलाल भाई से जमीन वापस मांग रहा था।

रामलाल मजबूत कद काठी का और थोड़ा पैसेवाला था। वह श्यामलाल को धमकाए रहता था और कहता था। तुम्हें जो करना हो कर लेना पर घर के सामने की यह एक बीघा जमीन मैं नहीं दूँगा।

श्यामलाल चाहता तो न्यायालय की शरण ले सकता था पर भाई से क्या लड़ना यह सोचकर वह पंचायत से भी फैसला अपने पक्ष में कराना चाहता था।

उधर रामलाल को जैसे पता चला कि श्यामलाल ने पंचायत में सरपंच को जाकर शिकायत कर दी है और आज पंचायत में गाँव वाले सभी उपस्थित रहेंगे।

गाँव में भी रामलाल की धाक थी पर समय कुछ भी करा सकता है यह सोच चालाक रामलाल ने पंचायत बैठने की निर्धारित समय से पहले वह सरपंच के घर चला गया।

सरपंच भी रामलाल की दादागिरी से डरता था। रामलाल को देखते ही सरपंच ने कहा--आईए रामलाल जी? कहिये कैसे आना हुआ। पंचायत में तो मुलाकात हो ही जाती फिर मेरे पास आने का कारण। कुछ और भी काम है क्या?

रामलाल ने जहरीली मुस्कान के साथ कहा। नहीं नहीं सरपंच जी। मेरा कुछ और काम नहीं है। मैं सोचा पंचायत में आपके साथ चलूँ यह सोच आपके घर आ गया।।

हम पंचायत के लिये घर से निकलें कि आप मेरी बात सुन लीजिये। रामलाल ने सरपंच से कहा।

सरपंच--हाँ -हाँ बोलिये, रामलाल जी।

सरपंच जी! आपको मालूम है मैं अपने हाथ आई जमीन को भाई को नहीं दूँगा। यह जानते हुए भी आप पंचायत कैसे करा रहे।।

सरपंच ने हँसते हुए कहा! रामलाल जी! वह जमीन लाखों का है और आप मुफ्त में हथियाना चाहते हैं। सरपंच को वेतन तो मिलता नहीं है। ऐसे ही किसी लफड़े को मैनेज करने से कमाई होती है न।

रामलाल चतुर था। सरपंच की चाल को समझ गया। तुरंत कमर में हाथ डाला और पचास हजार सरपंच के हाथ रख दिया।।

ये न हुई बात कहकर सरपंच खो!खो! कर हँसने लगा। रामलाल भी मंद -मंद मुस्कान भर पंचायत भवन की ओर चल पड़ा।

रामलाल निंश्चिंत हो गया कि अब जमीन उसी के पास रहेगा। ठीक बारह बजे दोपहर में पंचायत बैठी। रामलाल और श्यामलाल दोनों ने जमीन पर अपनी दावेदारी की बात कही।

गाँव के कुछ लोग श्यामलाल की ईमानदारी से परिचित थे और श्यामलाल जी के हक में फैसला चाहते थे। पर सरपंच ने यह कहकर फैसला को रामलाल के पक्ष में सुनाया कि सामाजिक नियम के अनुसार परिवार में आपसी बंटवारे से कुछ अधिक जमीन बड़े भाई को दिये जाने का नियम है। अत: वह एक बीघा जमीन रामलाल के ही कब्जे में रहेगा।

श्यामलाल ने तब रोते हुए पंच से कहा। ऐसा नियम राज घरानों में होता था। हम तो किसान के बेटे हैं। हमारे साथ ऐसा अन्याय या पक्षपात न करें। पंच में परमेश्वर का वास होता है। पंच को बदनाम न करें ।

पर पंचप्रमुख तो पैसा खा चुका था। वह क्या सुने? निर्णय रामलाल के पक्ष में चला गया।

दो जून की रोटी

कल्लू की आखिरी ख्वाहिश थी! उसके दोनो बेटे रघु और रंथु पढ़ लिखकर कोई सरकारी नौकरी प्राप्त कर लें।

रिक्सा चलाकर पपिवार का भरण-पोषण करता कल्लू दोनों बेटों को सरकारी स्कूल में दाखिला करा दिया।

रघु-रंथु जुड़वें भाई थे। रघु पढ़ने में जितना होशियार था रंथु उतना ही भाई के विपरीत मनचला और उदंड। आए दिन स्कूल से रंथु की शिकायत आती रहती थी। कल्लू अपने पुत्र रंथु को लेकर परेशान रहने लगा।

रिक्सा चलाकर परिवार परवरिश करता रंथु अब थकने लगा था। उधेड़बुन की स्थिति में एक दिन शाम के वक्त कल्लू दोनों बेटों को पास बिठाया।

रंथु से उसके कैरियर पर सवाल किया। रंथु! कल्लू की आवाज।

जी बाबा-रंथु की आवाज।

कल्लू ने रंथु से कहा- मुझे रघु की चिंता नहीं है पर तुम्हारी हरक्कत से मैं परेशान हूँ। रिक्सा खींचकर परिवार के लिये दो जून की रोटी कमाने वाला मैं कल्लू बहुत दिनों तक जी नहीं सकता। मेरी कमाई कम हो रही और तुम्हारे चलते बदनामी भी झेलनी पड़ रही।

बेटा रंथु! पढ़ने का मन नहीं तो कुछ काम करो जिससे कि मेरे दो जून की रोटी की कमाई में तेरी भी भागीदारी हो और हम, दोनों शाम, भर पेट भोजन कर सकें।।

शिकायत

घंटों वेटिंग रूम में बैठने के बाद आखिर सावित्री को कलक्टर साहब का बुलावा आया।

जिले के कलक्टर साहब लोगों की आम समस्या को सुलझाने के लिये सप्ताह में एक दिन मंगलवार को अपने कार्यालय में जनता दरबार लगाकर समस्याओं का फरियाद करने बैठते थे।

सबके मुद्दे अलग-अलग होते थे। मुद्दों के अनुसार ऑन स्पॉट फैसला या फिर थोड़ा झंझट वाला हो तो संबंधित विभाग को सूचित कर कारर्वाई का आदेश देते थे। शिकायत कर्ता महिला हो या पुरुष सबको एक तरह का न्याय मिलता था।

सावित्री की समस्या कुछ अलग तरह की थी।

दरअसल सावित्री को गाँव वाले डायन बिसाही का आरोप लगाकर तंग किया करते थे।

सावित्री के पति का आकस्मिक निधन हो चुका था। सावित्री का बेटा रोहण बाहर प्रदेश में अपने परिवार को लेकर कमाता खाता था। समय समय पर अपनी माँ के लिये रुपये-पैसे भेजता रहता था। सावित्री धार्मिक प्रवृति की महिला थी और उसकी यही धार्मिक प्रवति उसके लिये काल बन गया था।

सावित्री के गोतिया वाले लोगों को सावित्री की जमीन जायजाद पर बूरी नजर थीं। गोतिया परिवार सावित्री को भगाकर या मारकर उसकी जायजाद को अपने कब्जे में रखना चाहते थे।

सावित्री को यह अंदेशा पहले से था कि गोतिया के लोग सावित्री को हटाना चाहते हैं। सावित्री अपने बेटे को भी इस बात से अवगत करा दिया था।

बेटे ने घर आने से असमर्थता जाहिर किया पर यह भी कहा कि विशेष परिस्थिति में माँ तुम कलेक्टर से सीधे शिकायत करना।

इसी सिलसिले में सावित्री आज कलक्टर साहब के पास आई और काँपते हाथों से शिकायत पत्र कलेक्टर साहब के हाथों थमा दिया। कलेक्टर साहब ने विस्तार पूर्वक शिकायत पत्र को पढ़ा और मन ही मन बुदबुदाया। ये अंधविश्वास का खेल दुनिया को पागल कर देगा

कलेक्टर साहब गाँव वालों, खासकर सावित्री के गोतिया परिवार की साजिश को समझ गये। तुरंत कलेक्टर साहब ने थाना को फोन किया और थानेदार को बुलाया। थानेदार भी यथा शीघ्र कलक्टर साहब के कार्यालय में पहुँचा और सारा माजरा समझ लिया।

सावित्री को अपनी गाड़ी में बिठाकर थानेदार सावित्री के गाँव पहुँचा। सावित्री को थानेदार के साथ आया देख गाँव वालों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई।

थानेदार ने तुरंत पंचायत कर गाँव वालों को चेताया। सुन लो गाँव वालों! सावित्री को जिला कलक्टर ने आज से अपना बहन मान लिया है और हमें इसकी देख रेख को कहा है। तुम सब सावित्री के साथ जो खेल खेल रहे हो वह बंद करो। फिर कोई शिकायत मिली तो तुम सब आजीवन कारावास में रहोगे।।

गाँव वालों ने कुछ गलत न करने की कसमें खाई और फिर लिखित इकरार नामा भी दिया।

सावित्री के आँखों खुशी के आँसु थे।।

तपती धूप

सुबह 06 बजे से सुबह 09 बजे तक हल चलाकर रघु और प्रभु दोनों भाई तेज घूप से बचने के लिये बरगद के नीचे बैठे आराम कर रहे थे।

मई आखिरी और जून माह का प्रारम्भिक पल और तेज धूप। परेशान दोनों भाई धूप सहन न कर पाने के कारण हल बैल के साथ बरगद पेड़ के नीचे आ गये थे। घर से पानी और नाश्ता के लिये बाजरे की रोटी ले गये थे।

दोनों नाश्ता करते आपस में बतिया रहे थे--उफ्फ ये गर्मी। लू लगने का डर है भैया यह कहते हुए प्रभु ने रघु को घर वापस चलने के लिये कहा।

रघु ने हामी भरते हुए कहा! हमारा घर यहाँ से एक किलोमीटर की दूरी पर है। घर वापसी में भी धूप तो लगेगी ही। जानवरों को भी लगेगी। अभी जानवर हमारे पुआल खा रहे। उन्हें भी आराम की जरूरत है। और यह बरगद का छाँव हमें ठंडक का सुकूँ दे रहा। नाश्ता कर ही लिये हैं तो क्या सोचना? बेर ढलने पर घर वापसी करेंगे। तबतक इसी बरगद पेड़ के नीचे विश्राम कर लेंगे।

गर्मी मौसम का यह आखिरी पल है और इतनी तेज गर्मी का क्या कारण है भैया? प्रभु ने रघु से पूछा।

रघु ने फिर प्रभु से कहा। सुनो! हमारा भारत देश मुख्यत:तीन मौसमों का देश है। वह है -जाड़ा, गर्मी और बरसात। आखिरी पल में हर मौसम अपना रौद्र रूप दिखाता है। गर्मी का यह आखिरी पल रोहिणी नक्षत्र का है जिसे नौ तपा भी कहते हैं। 25 मई से 08 जून तक का यह पल बहुत तेज धूप वाला होता है। इस समय सूर्य भगवान पृथ्वी के काफी करीब रहते हैं और जिसके कारण तेज धूप लगती है। नौ तपा का यह पल भी आगे अच्छी बरसात होने का संकेत देता है। हम किसानों को इसकी जानकारी रखनी चाहिये।

हाँ इस रोहिणी काल में धूप से बचने का प्रयास जरूर रहना चाहिये और नहीं तो जानलेवा लू लगने की संभावना बढ़ जाती है।। तेज तपती धूप का यही रहस्य है।।

आत्ममंथन

शर्मा जी के घर के पास लोगों की भीड़ और पुलिस दल की मौजुदगी देख गुप्ता जी घबराकर वापस लौटने ही वाले थे कि शर्मा जी गुप्ता जी को आवाज देकर बुलाया।

अवकाश दिवस सोचकर प्रत्येक रविवार को गुप्ता जी और शर्मा जी एक साथ बैठकर समाचार पत्र पढ़ते और घर परिवार पर चर्चा के साथ साथ दुनिया दारी की भी बात करते।

गुप्ता जी इसी ख्याल से रविवार दिन जान शर्मा जी से मिलने आ रहे थे, पर शर्मा जी के घर के पास लोगों की भीड़ और पुलिस दल देख घबरा गए थे।

शर्मा जी के बुलाने पर गुप्ता जी शर्मा जी के पास पहुँचे। शर्मा जी की आँखे आँसुओं से भ़री हुई थीं।

रुँधे आवाज में शर्मा जी गुप्ता जी को पकड़ बोलने लगे! गुप्ता जी! मैं तो लूट गया! मैं बर्बाद हो गया! मेरी दुनिया अब अंधार हो गई। जीने की खुशियाँ समाप्त हो गई!

गुप्ता जी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कोई बताएगा? शर्मा जी के साथ क्या हुआ है?

तभी शर्मा जी के पड़ोसी घनश्याम जी ने गुप्ता जी के कान में धीरे से कहा! शर्मा जी का बेटा राहुल! सुसाईट कर लिया है। कमरा अंदर से बंद है। पुलिस उसे किवाड़ तोड़कर निकलवा रही है।

और तभी लोगों की चिल्लाहट सुनाई पड़ी। कमरे का किवाड़ टूट चुका था और अंदर पंखे में राहुल फंदे पर झूल प्राण त्याग दिया था।

राहुल की आत्महत्या को लेकर सब अपने हिसाब से कारण निकाल रहे थे पर मूल कारण क्या है वो तो राहुल के पिता शर्मा जी ही जान सकते थे।

शर्मा जी और उनकी पत्नी तो बेहोश में बेहोश हुए जा रहे थे। दो बहनें थी जो राहुल से छोटीं थीं।

अपने स्कूल का सबसे होनहार छात्र और मोहल्ले में लोकप्रिय रहा राहुल मृदुल स्वभाव का लड़का था। राहुल सुसाईट जैसा बड़ा कदम उठा लेगा यह किसी को उम्मीद नहीं थी।

स्कूल को खबर गया तो स्कूल के सभी शिक्षक और फिर मोहल्ले के लोग राहुल के इस पीड़ादायक कदम पर स्तब्ध थे।

खैर! जो नहीं होना था वह हो चुका था। आगे थाना जाकर रिपोर्ट लिखाई गई फिर पोष्टमार्टम के बाद राहुल की लाश शर्मा जी को सुपूर्द कर दी गई। मोहल्ले वालों का साथ शर्मा जी को मिला और फिर राहुल का अग्निसंस्कार भी कर दिया गया।

मोहल्ले में बहुत दिनों तक मातम सा सन्नाटा बना रहा।

गुप्ता जी समय निकाल कर फिर शर्मा जी से मिल ने गये ताकि दुखों का बंटवारा कर शर्मा जी के मन को हल्का कर सकें।

बहुत साहस करके गुप्ता जी ने शर्मा जी से राहुल की आत्महत्या का कारण जानना चाहा।

बहुत लंबी सांस लेकर शर्मा जी गुप्ता जी से कहा। क्या कहें गुप्ता जी! जमाना इतना खराब हो गया है कि बच्चे आज के अपने मन के हो गये हैं। हम विश्वास पर बच्चों को खुली छूट दिये चलते और बच्चे जमाने के हिसाब से चलना चाहते रहे हैं।

गुप्ता जी! क्या कहूँ मैं। अविश्वस्नीय तरीके से मेरा पुत्र राहुल नशे का आदि हो गया था। इतना आदि की वह बिन नशे का एक दिन भी नहीं रह पाता था। दो महीने से स्कूल जाना बंद कर रख्खा था। दिन भर कहाँ रहता किसी को मालूम नहीं? राहुल के स्कूल न जाने की शिकायत आने लगी। परिवार में किसी को पता नहीं था।

एक दिन स्कूल से राहुल के स्कूल न जाने की शिकायत के साथ एक वार्निंग लेटर भी आया। "यदि राहुल दो दिन के अंदर स्कूल नहीं आएगा तो स्कूल से उसका नाम हटा दिया जाएगा और इसकी जवाबदेही उनके पिता/माता/अभिभावक पर होगी।

यही पत्र जब राहुल को पढ़कर हमने सुनाया तो वह कुछ न बोल कमरे के अंदर जाकर किवाड़ बंद कर लिया। कुछ देर बाद निकल ही आएगा यह सोचकर हम चुप रहे। पर राहल बिना कुछ सोचे इतना बड़ा कदम उठाएगा हमने नहीं सोचा था।

नशे का आदि हो चुका राहुल हमेशा चुप रहता था।

गुप्ता जी आज तो मेरे बेटे के साथ ऐसा हुआ है। कल किसी और के साथ भी यह हो सकता है। प्रत्येक दस युवा में छःसात युवा नशे का शिकार हो रहे हैं। हमें आत्ममंथन करना होगा कि हमारी परवरिश में कहाँ लापरवाही हो रही है।।

समाज कहाँ लापरवाह है। देश और राज्य प्रशासन कहाँ पर फेल हो रहे। स्कूलों की शिक्षा से क्या बच्चे संस्कारी नहीं हो रहे।

हमारा प्यार क्या कम है या यह तकनीक की दुनिया में सोशल मिडिया जवाब देह है। आखिर क्यों आज के बच्चे जिन्दगी का मतलब नहीं बूझ रहे और बीच में ही दुनिया छोड़ने का संकल्प ले रहे।

तमाम और भी मुद्दे हो सकते हैं जिसे हम देख या समझ नहीं पा रहे। इतना बोलकर शर्मा जी फिर गुप्ता जी से कहा। गुप्ता जी हमें, समाज, शासन, प्रशासन, बड़े छोटे सभी को आत्ममंथन करने की जरूरत है।

समस्याओं के समाधान की जरूरत है जिससे कि बच्चों का और देश का भविष्य सुरक्षित हो सके।।

शक

रामलाल अपने बगीचे में आम के सैकड़ों पेड़ लगा रख्खे थे। हर साल आम के अच्छे फल पेड़ों में आते रहने से रामलाल की अच्छी कमई हो जाती थी।

आम मैं मंजर लगते ही रामलाल आमों की देखभाल करने लग जाता था। घर के नजदीक में बगीचा रहने के कारण रामलाल के परिवार के और लोग भी आम पेड़ों और फलों की रखवाली करते रहते थे।

ऱाम लाल का पड़ोसी हीरालाल मजाकिया अंदाज में रामलाल को चिढ़ाते रहता था। हीरालाल मजाक मजाक में आम की चोरी हो जाने की बात करते रहता था। रामलाल, हीरालाल की इन बातों से गुस्साए रहता था।

यद्धपि हीरालाल का भी आम का अपना बगान था पर गाँव से बाहर था। हीरालाल के आम चोरी हो जाते थे जिससे हीरालाल को आर्थिक हानि उठानी पड़ती थी।

यूँ तो हीरालाल दिल का साफ सुथरा और इमानदार आदमी था। उसे किसी आदमी की तरक्की से कोई ईर्ष्या नहीं थी। रामलाल फिर भी हीरालाल की बातों से खिन्न रहता था।

इस साल भी रामलाल के बगीचे में बहुत आम के फल लगे थे। रामलाल दिन रात की पहरेदारी कर आम को पकाने में लगा था।

समय की चाल है। समय अपने हिसाब से चलता है। एक दिन रामलाल की पत्नी अचानक बीमार पड़ गई। स्थानीय इलाज से कोई लाभ न देख राम लाल अपनी पत्नी को शहर ले गया। दुर्भाग्य से रामलाल को चार दिन शहर के अस्पताल में रहना पड़ गया। घर में रह गये थे बच्चों से आम बगान का देख भाल नहीं हो पाया। शहर से लौटकर रामलाल पहले बगीचा गया। बगीचे में देखता है कि आम के पेड़ों से तैयार आधे से अधिक आम तोड़ लिये गये हैं।

राम लाल सिर में हाथ रखकर बैठ गया। उसके मन में शक हो गया कि मेरी(रामलाल) की अनुपस्थिति का नाजायज लाभ लगता है हीरालाल ने उठा लिया है।

किसी से कुछ न पूछकर रामलाल ने हीरालाल की शिकायत पंचायत से कर दी और उचित न्याय की मांग की। हीरालाल को तनिक भी पता नहीं था कि रामलाल ने पंचायत में उसकी शिकायत कर दी है।

पंचायत में हीरालाल को बुलाया गया और रामलाल की शिकायत को हीरालाल से कहा गया।

पंचायत ने हीरालाल से कहा-रामलाल ने आपके नाम आमों की चोरी का मामला दर्ज किया है। पंचायत आपसे जानना चाहता है कि क्या रामलाल जो कह रहा वह सच है। जवाब दीजिये।

हीरालाल ने पंचायत से कहा।

यह सच है कि मैं मजाक मजाक में रामलाल से आमों की चोरी हो जाने की बात करते रहता था पर मैं इतना भी गिरा हुआ इंसान नहीं हूँ कि किसी के बगीचे से आम या कोई फल चुराऊँ। मेरे भी आम के बगीचे हैं। रामलाल का यह शक मिथ्या है।

मुझे पता चला है कि बहुत ऐसे गाँव हैं जहाँ से इस साल आमों की चोरी हुई है। बाहर के किसी और गाँव से आए चोरों ने रात के रात आमों की चोरी करते गये हैं। रामलाल का यह मिथ्या आरोप गलत है। मेरे भी बगीचे से आम की चोरी हुई है। मैने कहाँ किसी पर आरोप लगाया है।

गाँव वालों ने थाने में जाकर रपट लिखाई है। रामलाल को चाहिये वह थाने में जाकर अग्यात चोरों के विरुद्ध रपट लिखाए। बेबुनियाद की बातें और शक से संबंध में कटुता आती है। सोच समझकर ही आरोप लगाना चाहिये।

पंचायत बीच रामलाल लज्जित हुआ और हीरालाल से क्षमा मांग हीरालाल पर लगाए आरोप को वापस ले लिया।।

विडंबना

जेठ का दोपहर। किसान कोई एक बड़े वरगद पेड़ की छाया में विश्राम कर रहा था। किसान को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता सताए जा रही थी। किसान के बच्चे युवा हो गये थे लेकिन पढ़ाई लिखाई से कोसों दूर निठ्ठलों की संगति में दिन गुजार रहे थे। अपने पिता के किसी काम में हाथ नहीं बंटा रहे थे। आए दिन उनकी शिकायत गाँव वालों से सुनते सुनते किसान अपनी जिन्दगी हारते चल रहा था।

वरगद के एक डाली पर बैठे कौवा और कौवी दोनों किसान की मनोदशा को देख रहे थे। कौवी ने कौवे से पूछा!! आखिर क्यों किसान इतना परेशान लग रहा है। क्या वह भूखा है या कोई अन्य कष्ट है।

कौवे ने कौवी से कहा! नहीं कौवी! किसान की परेशानी का कारण कुछ और है। मैं आए दिन इस किसान के घर के पास के इमली पेड़ में कुछ पल के लिये बैठता हूँ। संपन्न किसान है पर इसके बच्चे कामचोर और कलह करने वाले हैं। निठ्ठल्ले रहते और आए दिन अपने पिता से रूपये पैसे की अनावश्यक मांग करते रहते हैं। पैसों का वो दुरूपयोग कर साथियों के मनोरंजन में खर्च करते हैं। किसान की यही सबसे बड़ी परेशानी है।।

कौवी ने फिर कहा--आदमी के घर जन्म लेकर भी विवेक नहीं! यह तो गलत बात है। कौवी ने फिर कौवे से पूछा! सृष्टि में आदमी के होने का क्या अर्थ है। कौवे ने कौवी से कहा! सभी जीवों की उत्पति का अपना अर्थ है। सृष्टि ने बेवजह काम कुछ भी नहीं किया है।

सुनो कौवी! सृष्टि ने सभी चर अचर जीवों की रचना के बाद मानव जाति जैसे सुंदर जीव की रचना की। मानव की आँखों और दिल दिमाग के माध्यम से सृष्टि की सुंदरता को देखते रहने के लिये सृष्टि ने मानव जाति की रचना की है।

बुद्धिमान होने के कारण खुद की जाति की और सृष्टि के अन्य जातियों की रक्षा कर उनका संवर्धन करेगा। उनको जीवित रखेगा और आगे बढ़ाता रहेगा। पर विडंबना यह है कि आज मानव जाति ही सृष्टि का दुश्मन हो गया है। खुद की जाति का प्रवाह तो छोड़ो! आज मानव जाति अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये सृष्टि के नियम से बाहर रह सृष्टि की नाश में डूबा हुआ है।

अब तो भगवान ही मालिक हैं समझो। कौवी को यह बोल कौवा शांत बैठ गया।।

विधि का विधान

मंजू!!!!! सत्यपाल ने अपनी पत्नी को जोर से आवाज देकर एक गिलास गर्म पानी लाने को कहा।

मंजू!! अच्छा जी ला रही हूँ! मंजू तुरंत ही गिलास में पानी लिये पति सत्यपाल के पास खड़ी हो गई।

सत्यपाल ने गिलास को जैसे ही हाथ में लिया उसे पता चल गया कि पानी गर्म नहीं ठंडा है। आँख तरेरते हुए पत्नी मंजू की ओर देखा और पानी से भरे गिलास को मंजू के देह में फेंक मारते हुए कहा!

हरामजादी!! यही गर्म पानी है! कान से बहरी हो क्या कहते उपर से कान में जोर का थप्पड़ जड़ दिया।

जोरदार थप्पड़ खाकर मंजू जमीन पर गिर गई। फिर कांपते हाथों से गिलास उठाई और गर्म पानी लाती हूँ कहकर रसोई में चली गई।

सत्यपाल और मंजू बीच शादी के दो साल हो गये थे मगर सत्यपाल की प्रताड़ना से मंजू परेशान रहती थी। ससुराल में इतना कष्ट पाने के बाद भी मंजू अपने मायके से शिकायत नहीं करती थी। पढ़ी लिखी पर बेहद सीधी साधी मंजू आए किसी दिन सब सुधर जाएगा सोचकर चूप रहती थी।

इधर सत्यपाल ठेकादारी का काम करता था, तथा मजदूरों से गाली ग्लौज करने की आदत उसकी घर तक आ गई थी। मंजू परेशान रहने लगी थी।

इस घटना के पंद्रह दिन गुजरे होंगे कि मंजू को सूचना मिली कि सत्यपाल हॉस्पिटल में एडमिट हो गया है। काम के सिलसिले में बाहर गया था और वहीं उसे दौरा पड़ा और बेहोश है।

जल्दीबाजी में मंजू भी हॉस्पिटल पहुँच गई। मंजू ने देखा कि सत्यपाल हॉस्पिटल के बेड पर लेटा हुआ है और उसके भरोसेमंद कर्मचारी वहाँ खड़े होकर सत्यपाल के होश में आने का इंतजार कर रहे थे।

मंजू को देखते ही कर्मचारियों ने उन्हें रोने से मना किया और ढाढ़स दिया कि सत्यपाल जी जल्द ही ठीक हो जाएँगे। डॉक्टरों की टीम आई थी। सब जांच के बाद

दवाई चल रही है। मंजू भी सत्यपाल के होश में आने का इंतजार करते हॉस्पिटल में ही रह गई।

चार घंटे बाद जब सत्यपाल को होश आया तो मंजू को देख कुछ बोलना चाहा मगर मुँह से आवाज ही नहीं निकल पा रही थी। शायद सत्यपाल को लकवा मार गया था।

सत्यपाल के होश में आने की खबर पर डॉक्टर भी आए और फिर उन्होंने भी सत्यपाल को लकवा मारे जाने की पूष्टि कर दी।

सत्यपाल मंजू की ओर देख रहा था। उसे एहसास हो गया कि मंजू को सताने और अन्य किसी को डाहने का यह दुष्परिणाम में दंड मिल गया है।।

विधि का विधान है। जैसी करनी वैसी भरनी।।

विकल्प

आधुनिक समाज के अंदर जातिवाद जैसे विषैले बातों को लेकर ब्राहम्मणों के विरुद्ध जो षडयंत्र होते देख आज महेश मिश्रा जी ने ब्राहम्मणों की एक बैठक बुलाई थी।

जिले के करीब पचास ब्राहम्मण उस बैठक में शामिल हुए। किसी को पता नहीं था कि महेश मिश्रा जी को कौन सी परेशानी है जो यह बैठक बुलाई गई है।। सभी एक दूसरे का मुँह देखते हुए और अपना परिचय तथा पता ठिकाना बताकर दूसरों का भी परिचय पूछ बैठते गये।

बैठक में और किसी के आने की उम्मीद नहीं है जानकर महेश मिश्रा जी ने सामूहिक गायत्री मंत्र बोलकर बैठक का एजेण्डा बतलाने की बात कही।

सभी ब्राहम्मणों ने गायत्री मंत्र का सामूहिक पाठ किया और फिर एजेण्डा बतलाने को कहा।

महेश मिश्रा जी ने बैठक में आए सभी ब्राहम्मणों को पहले धन्यवाद ग्यापित किया फिर बैठक का एजेण्डा बतलाने लगे।

महेश मिश्रा जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा। आधुनिक समाज जातियों में बँट गया है। अस्सी प्रतिशत लोग आरक्षण का लाभ लेकर धनवानों की श्रेणी में आ गये हैं। उनकी संख्या भी अधिक है। लोकतंत्र प्रणाली से देश चल रहा है और लोकतंत्र में जिनकी भी अधिक संख्या है वो सत्ता के मालिक बन रहे हैं। उनकी मंशा सत्ता हथियाकर शासन और शोषण करने की रही है।

परिवारवाद का बोलबाला है जिससे वे अपनी जातियों के लाभ के सिवा सर्व हित की बात नहीं करते। देश को खोखला कर चला यह जातिवाद का जहर का असर और कसर हमारे नाम हो गया है।

लोगों ने भुला दिया कि देश की आजादी और नव निर्माण में ब्राहम्मणों का क्या योगदान है। विकट परिस्थितियों में राष्ट्र को रास्ता दिखाते रहने से देश के गद्दारों, राष्ट्रद्रोहियों में ब्राहम्मणों के प्रति इर्ष्या और डाह का भाव है। आज ब्राहम्मणों के विरुद्ध अनेक षडयंत्र चल रहे हैं।

हम गरीबी में भी जीवन यापन करने वाले ब्राहम्मण राष्ट्र सर्वोपरि का ख्याल रख चलते रहे हैं तथा संतुलित समाज के निर्माण में पूजा पाठ और अनुष्ठान पर जोर देते रहे हैं।

हम उच्च संस्कारों को प्राथमिकता देते रहे हैं। समाज को एक सूत्र में ले जाने की हमारी इसी परंपरा से देश द्रोहियों को हमारे से चीढ़ है और आए दिन हमारी अस्मिता पर कुदृष्टि डाले चल रहे हैं।

षडयंत्रकारियों की नजरें हमारी संपदा, हमारी बहु बेटियों पर है। हमें बर्बाद कर अपना सुकूँ चाहते।

इतना कहने के बाद महेश मिश्रा ने सभी ब्राहम्मणों से कहा!!! ब्राहम्मण साथियों! हमारा वजूद हमारे जीने से है। हम यदि मार काट दिये जाएँगे तो हमारा वजूद रहेगा क्या? ऐसे भी सदियों से कटते आ रहे। समाज का अग्रणी बने रहे से अब कोई फायदा नहीं है।

आज इस बैठक में कसम खाकर यहाँ से जाएँ कि हम अब पूजा कर्मकांड से दूर होकर कोई नये काम करने की सोचेंगें। हम व्यापार कर लेंगे, नौकरी कर लेंगे, पानी पूरी बेच लेंगे।

यानि अपराध को छोड़ वो सभी काम करेंगे जिससे अर्थोपार्जन हो सके मगर पूजा कर्मकांड से दूर रहेंगे। कर्मकांड हम अपने परिवार तर सीमित रखेंगे।

सुरक्षित जीवन के लिये मुझे यही विकल्प बढ़िया लग रहा है। आप सभी अगर सहमत हैं तो साथ दें। सभी ने अपनी सहमति दी तथा महेश जी का यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया।।

बंधन

मोबाईल की घंटी बजते ही हरेन्द्र जी कुर्सी से झठ उठे और मोबाईल कान में लगा लिया।

दूसरे तरफ से आवाज आई! हरेन्द्र जी बोल रहे हैं क्या?

हरेन्द्र जी!- हाँ मैं हरेन्द्र जी ही बोल रहा हूँ! पर आप कौन?

हरेन्द्र जी ने फोन करने वाले परिचय पूछा।

दूसरी ओर से आवाज आई! भाई हरेन्द्र जी! मैं आपका पड़ोसी रहा हूँ। मैं सत्यनारायण बोल रहा हूँ।

हरेन्द्र जी!! - अरे रे रे!! भाई सत्यनारायण जी! माफ करना भाई! आवाज नहीं पहचान पाया था। दरअसल आपका मोहल्ला छोड़े भी तो दस साल हो गये।

खैर छोड़िये ये सब। बताईए कैसे हैं। हरेन्द्र जी ने सत्यनारायण जी से पूछा।

सत्यनारायण जी ने कहा! सब कुछ ठीक है। बेटा बहू के साथ अमेरिका रह रहा हूँ। आपकी याद आई तो हाल चाल जानने के लिये फोन किया। आप कैसे हैं और आपके बेटे बहू कहाँ हैं।

हरेन्द्र जी!! सत्यनारायण जी हम सब भी ठीक ही हैं। हमलोग में मैं और मेरी पत्नी अपने ही शहर में रहते हैं। सेवा निवृति के बाद थोड़ा बहुत अस्वस्थ भी रह रहे हैं। जमाना बदल गया है। बदले जमाने की रंगत भी उदासी को लिये रहती है।

समाज में कोई ऐसा भी नहीं आज कि उनके संग बैठा जाए। सुख दुख की बात की जाए जिससे मन बहले।। घर में ही रहते हैं हम पति पत्नी। धर्म ग्रंथ पढ़ सुन समय काट रहे। इतना बोलकर हरेन्द्र जी मौन हो गये।

उधर से सत्यनारायण जी की आवाज आई। अरे भाई! जब बेटे बहू दोनों कमा रहे हैं और आनंद से रह रहे हैं तो आप उनके संग क्यूँ नहीं रहते। पोता पोती बीच मन बहलाते। समय कब निकलता पता भी नहीं चलता। मेरी सलाह मानिये तो आप बेटे बहू संग रहने का फैसला लीजिये।

हरेन्द्र जी सत्यनारायण जी की बातों को सुन हँसे फिर बोले। सत्यनारायण जी! सभी आपके पुत्र जैसे समझदार हों यह जरूरी थोड़े है।

मान लिया समझदार भी हैं तो बेटों का हमने विवाह कर दिया है। उन्होंने अपनी पत्नी को जीवन भर सुखी रखने की कसमें खाई है।

ठीक उसी तरह जिस तरह से हमने खाई है। पति पत्नी का जो वैवाहिक बंधन है उसका निर्वहन बच्चे कर रहे। मैं उस बंधन का निर्वहन खुद कर रहा हूँ। रिश्तों का यह पवित्र बंधन को स्वीकार कर निर्वहन करना ही हमारा धर्म है।। मैं उसी धर्म का पालन कर रहा हूँ।

सत्यनारायण जी निरुत्तर हो फोन काट दिया।।

अनजानी डगर

किसी रात जंगल में अचानक लगी भयंकर आग, और आग का फैलाव देख सभी जानवर जंगल छोड़ भाग निकले। जिसको जिधर मन हुआ वह अपनी जान बचाने उधर ही भाग चला।

जंगल के अपने झूँड से निकला बिट्टू सियार तो ऐसे रास्ते पर चल पड़ा जो उसके लिये अंजान था। दूर-दूर तक उसे बस मैदान ही मैदान नजर आ रहा था।

बहुत दूर चलने के उपरांत उसे भूख लगने लगी, मगर बंजर मैदान में चूहे भी नहीं थे। उसे भोजन कहाँ से मिलता।

कुछ दूर और आगे बढा तो उसे एक घना बगीचा दिखा। वह बगीचे की ओर चल पड़ा यह सोचकर कि शायद कोई भोजन का जुगाड़ हो जाए। जैसे ही बगीचे के पास पहुँचा कि बिट्टू सियार को कुत्तों के भौंकने की आवाज आई। सियार ने समझ लिया कि यह इंसानों का गाँव है। उसके कट्टर दुश्मन कुत्ते उसे नोंच मारेंगे।

बिट्टू सियार दबे पाँव वापस लौटा और फिर वह किसी और अंजान डगर को पकड़ चलने लगा। किश्मत उसकी अच्छी थी कि वह कोई एक दूसरे जंगल में जा पहुँचा। कुछ देर भटका होगा कि उसे अपने झुँड के सियारों से मुलाकात हो गई ।

बिट्टू ने अपने झूँड को अपनी आपबीति बताई। सभी सियारों ने कहा! चलो जान बची तो लाख उपाय। आगे कभी भी अंजान किसी डगर पर अकेले मत निकलना।

समूह के सियार भी बिट्टू की परेशानी से सीख लें और बिना सोचे, बिना जाने अंजान डगर का सहारा ले शिकार में मत निकलना।।

नया दिन नई रात

महेन्द्र जी और उनकी पत्नी प्रमिला! घर के बरामदे में बैठ सुबह की चाय पी रहे थे। खामोशी थी। दोनों ही अपने अपने बिचारों में खोए! बस सुड्प सुड्प कर चाय पीने की आवाज आ रही थी।

कुछ समय गुजरा कि महेंद्र जी ने चुप्पी तोड़ी और प्रमिला से कहा। बेटा अनुप आ रहा है हमें ले चलने के लिये।

अनुप चाहता है कि माँ पिताजी यानि हम दोनों ही अनुप के साथ रहें। बुढ़ापा भी सताए चल रहा।

क्या कहती हो प्रमिला तुम। हमें अमेरिका जाना चाहिये या अनुप को मना कर दूँ।

प्रमिला ने कहा! अब आ रहा लेने हमें तो आने दो। कुछ दिन रहकर देख लेंगे। बहू का व्यवहार अगर हमारे अनुकूल रहेगा तो आगे की सोचेंगे। इतना भी हम कमजोर नहीं हुए हैं कि अपनी जिन्दगी हम हार बैठेंगे।।

बेटा ही न ले जा रहा। पराया तो नहीं।

महेंद्र जी! ठीक ही कहती हो।

चौथे दिन अनुप घर आ गया और माँ पिताजी को साथ चलने के लिये लैगेज वगैरह बांधने को कहा।

दूसरे दिन सुबह आठ बजे एक कार घर के बाहर आ खड़ी हुई। जल्दी तैयार हो अनुप अपने माँ बाप के साथ एयर पोर्ट के लिये चल पड़ा।

दो दिन के हवाई सफर के अनुप अपने माँ बाप को लेकर अमेरिका पहुँचा। महेंद्र जी की बहू एयर पोर्ट पर स्वागत कर फिर घर ले गई।

महेंद्र और प्रमिला इस बात से खुश हुए कि उनकी बहू भारतीय संस्कार को भूली नहीं थी। दिनभर तो एक दूसरे का हाल चाल पूछते वक्त गुजर गया। रात जो सोने के लिये महेंद्र और प्रमिला कमरे में गए तो उन्हें नीद नहीं आ रही थी।

उनके लिये तो जैसे दिन नया वैसा ही रात नई लग रही थी।।

उलाहना

अरे पार्वती!! अरे पार्वती!! पार्वती रे!!!!!

सुनैना जोर की आवाज देकर अपनी बहू पार्वती को बुला रही थी।

पार्वती शायद शौच क्रिया से निवृति के लिये वॉथरूम गई हुई थी? सुनैना की पड़ोसन रोहिणी सुनैना से मिलने आई हुई थी। मौका था बहू की शिकायत करने की। सुनैना ने उस अवसर का लाभ उठाते हुए रोहिणी से कह ही डाला।

देख रही हो रोहिणी! आजकल की बहुओं को! मेरी आवाज देने पर भी चाल नहीं कर रही। घोर कलियुग आ गया है। कैसे ये बुढ़ापा कटेगा ऐसे में? हमलोग भी एक समय बहुएँ रहीं हैं। सास स्वसुर की सेवा के लिये एक पैर खड़े रहते थे। आज की ये कलियुगी बहुएँ??? न जाने आगे क्या होगा?

सुनैना की बातों को सुन रोहिणी सुनैना को कही! हो सकता है बहु वॉथरूम गई हो। आवाज सुनी होगी तो आ ही जाएगी। - सुनैना!!

अरे नहीं रोहिणी! आज कल की बहुएँ बहुत चालाक हो गई हैं। माँ बाप की परवरिश ढीली रही होती तो ऐसा ही होता है।

सुनैना और रोहिणी की बातें हो ही रही थीं कि पार्वती पास आ गई। आते ही पहले तो रोहिणी और सुनैना की पाँव छुई और फिर सुनैना से पूछी? आप मुझको आवाज दे बुला रही थी माँ। मैं वॉथरूम में थी तो निकलने में देर हुई।

सुनैना!!!- कुछ नहीं! कुछ नहीं!! देखो रोहिणी आई है। हम दोनों को चाय पिलाओ।

पार्वती!- ठीक है माँ जी! तुरंत बना लाती हूँ। पाँच मिनट के अंदर पार्वती ने चाय बनाकर रोहिणी और सुनैना को दे गई। चाय पीती पीते रोहिणी ने सुनैना से कहा।- देखो! तुम्हारी बहू तो बहुत संस्कारी है। तुम्हारा आदेश मिलते ही बिना ना नुकूर किये चाय बना लाई। बेवजह बहू को उलाहना देना यह तेरी कमजोरी है। आगे इसी तरह करती रही तो सचमुच बहू बिगड़ सकती है। आज के समय के अनुसार चलना हमारा भी धर्म है। ये झूठ का उलाहना देना बंद करो।

सुनैना रोहिणी की बातों से झेंप सी गई और आगे से बहू को उलाहना न देने की कसम खाई।।

तपस्या

अपने कमरे में बैठ मंजू और उज्ज्वल दोनों पति पत्नी चाय पी रहे थे।

सूर्यास्त का समय था और दोनों की नजरें अस्ताचल गामी सूर्य की और थीं। दोनों ही अपने अपने विचारों में मग्न। घर लौटते पंछियों की चहचहाट, बस चारों ओर से सुनाई पड़ रही थी।

मंजू और उज्ज्वल को मात्र एक पुत्र था और पुत्र की शादी होने के बाद पुत्र भी अपनी पत्नी को ले दूसरे राज्य में रहता था। बैंक ऑफिसर के रूप में कार्यरत महेश बहुत ही सरल स्वभाव का और अपने माता पिता का परम भक्त भी था।

जैसा महेश का व्यवहार ठीक वैसा ही सरल स्वभाव की उसकी पत्नी प्रभा भी अपने सास ससूर को मानने वाली बहू थी।

इस परिवार में कमी थी तो बस एक कमी यह कि महेश के शादी के सात साल हो गये थे पर कोई संतानें नहीं हो पाई थी।

सभी तरह के पूजा पाठ और मंदिर मंदिर भगवान से प्रार्थना के बाद भी अभी तक इनके घर आंगन में बच्चे की किलकारी सुनाई नहीं पड़ी थी।

मंजू और उज्ज्वल के साथ साथ महेश और प्रभा भी संतान आने की आशा लिये हमेशा मौन रहा करते थे।

मानो मन ही मन तपस्या चल रही हो कि शायद भगवान जल्द सुन उनकी मनोकामना पूरी कर दें।।

पीले चावल

रविवार का दिन और मालती सुबह से ही घर की सफाई कर रसोई के काम में लगी हुई थी। मालती के पति सर्वेश जी भी मालती के काम में हाथ बँटा दे रहे थे।

सर्वेश जी सब्जी काटकर रसोई कक्ष में ले जाकर रख दे रहे थे तथा पोश्ते की भी पिसाई कर रख दिये। खुशी का वक्त था।

पहली बार बेटी के साथ-साथ मालती के दामाद बाबू भी सासू माँ के घर आ रहे थे।

डॉक्टर दामाद! खाने पीने के शौकिन घराने से हैं सोचकर मालती विभिन्न प्रकार की सब्जियों के साथ साथ दाल फ्राई के साथ साथ केशर/हल्दी युक्त सुगंधित अरवा चावल को पीला कर भात बनाने की तैयारी कर चुकी थी।

मालती के हाथों बनी पीले चावल की स्वाद को सर्वेश जी जान चुके थे। सर्वेश जी की ही सलाह पर अपने दामाद के लिये आज मालती पीले और सुगंधित चावल बनाने में लग गई।।

तर्पण

राहुलदेव जी सुबह से ही परेशान थे।

पितृ पक्ष का प्रथम दिवस उनको अपने स्व0पिता जी के नाम तर्पण कराना है और वर्तमान समय में पंडित, ब्राह्म्मणों को सार्वजनिक रूप से गाली ग्लौज किये जाने के कारण ब्राह्म्मणों ने पूजा पाठ, कथा कहने या फिर तर्पण आदि कार्यों का बहिष्कार कर दिया था।

ब्राह्म्मणों ने अपना छोड़कर समाज के अन्य वर्गों में नहीं जाने की कसमें खा ली थी।

सनातन विरोधियों के इस कुकृत्य का फल सज्जनों को झेलते देख राहुल देव जी ने अपने शहर के ब्राह्म्मणों के नाम एक अनुरोध पत्र समाचार पत्र में निकाल दिया था।

अनुरोध पत्र में स्पष्ट कहा गया था कि कुछ अभद्र मानसिकता और सनातन विरोधियों के कहे पर पूज्य ब्राह्म्मण कृपया हमारी संस्कृति को बचा लें। पितृ पक्ष का महीना है और जो पतृ पक्ष तथा श्राद्ध क्रिया आदि का मोल जानते हैं उनको न छोड़ें। ब्राह्म्मणों से आग्रह है कि आप सब पितृ पक्ष की भारतीय परंपरा को जीवित रखें।

ब्राह्म्मणों ने अखबार को पढ़ा और फिर आपस में बैठक कर निर्णय लिया कि जो आदर से बुलाकर संस्कार क्रिया कराना चाहे तो ब्राह्म्मण उनके घर जाकर उनको विधिपूर्वक तर्पण आदि का कार्य कराएँ।

राहुल देव जी की बातों का असर। राहुल देव जी के घर दो ब्राह्म्मणों का आगमन हुआ और विधिपूर्वक तर्पण का कार्य संपन्न कराया जाने लगा।।

पितृ दोष

सरकारी ठेका से अकूत संपति की कमाई करने के बाद अब भैरव सिंह आराम की जिन्दगी जीना पसंद करने लगे थे।

अपनी पत्नी शीला के साथ चारो धाम की यात्रा करने की सोच रहे थे कि अचानक उसी दिन सोमवार के दोपहर दो बजे उन्हें एक सरकारी नोटिस मिला। नोटिस पढ़ते ही भैरव सिंह चक्कर खाकर गिर गये।

शीला दौड़कर पानी लाई और भैरव सिंह के चेहरे पर पानी का छींटा देने लगी। कुछ मिनट हुआ होगा कि भैरव सिंह ने आँखें खोली।

शीला ने पूछा!- क्या हुआ? नोटिस पढ़ते ही क्यों होश खो गये। इस नोटिस में ऐसा क्या है जो आप तनाव में आ गये।

भैरव सिंह ने शीला से कहा!- हम बर्बाद हो गये शीला। मैने जो बीते बर्ष नदियों के दस बड़े बड़े पूल बनवाये थे।

पचास साल की गारंटी थी। पर इस साल की यह भयंकर बारिस से सब पूल एक ही दिन में ढह गये। अब सरकार उसे फिर से नये स्तर से बनाने को कह रही है।

विषय चिंताजनक इसलिये है कि सरकार अब उन पूलों के नवनिर्माण में कोई वित्तीय सहायता नहीं करेगी।

अरबों की लागत से बनी पूलें सब बह गईं। मैं अब अरबों में रूपया कहाँ से लाऊँ? भैरो सिंह यह बोल रोने लगे।

शीला ने भैरव सिंह को संत्वना देते हुए बोली।- धीरज से काम लीजिये। कुछ न कुछ उपाय या रास्ता निकल ही आएगा।

दूसरी ओर दूसरी चिंता कि बेटे का ब्याह हुए पंद्रह साल हो गये कोई बाल बच्चा नहीं।

भैरव सिंह दिमागी तौर से टूटने लगे। आर्थिक आमदनी का सब श्रोत बंद और फिर पुराना काम। भैरव सिंह सोच में पड़ गये।

शाम का वक्त। भैरव सिंह और शीला दोनों चाय पी रहे थे। चाय पीते पीते दोनों कुछ कुछ सोच रहे थे। उसी वक्त भैरव सिंह के मित्र ऱाधेश्याम जी आ पहुँचे।

भैरव सिंह तुरंत उठकर राधेश्याम जी का स्वागत किया और गले लग गये।

राधेश्याम जी जाने माने ज्योतिषाचार्य थे। शहर किसी काम से आए तो शाम होने के कारण अपने मित्र भैरव सिंह के घर आ पहुँचे।

भैरव सिंह को लगा जैसे कोई भगवान आ गये हों। रात भोजन उपरांत दोनों मित्र बैठे और अपनी अपनी कहानी सुनाने लगे।

भैरव सिंह ने सरकारी नोटिस और पूलों के बह जाने से धन हानि की बात छेड़ दी।

भैरव सिंह की बातों को सुनकर राधेश्याम जी ने कहा।- भैरव जी। जीवन एक जैसा नहीं रहता। कभी सुख तो कभी दुख यह जीवन का सार है। अच्छे, बूरे कर्मों के फल का स्वाद हमें चखना पड़ता है।

आपकी बातों से पता चल गया है कि आप पर पितृ दोष का प्रभाव है। आपने शायद पितरों को पानी देना और श्राद्ध क्रिया छोड़ दिया है। और जिसके कारण आपको अचानक आई यह आफत है।

रुपये की बहुतायत आवक होते रहने से बहुत ऐसे लोग हैं जो पितृ पक्ष में पितरों को पानी देना तथा पितरों के नाम श्राद्ध कर्म, दान आदि को भूल जाते हैं। यहाँ तक कि अपने मृत माता पिता की आत्मा की शांति भी नहीं कराते। मांस मदिरा में डूब कर लोक परलोक में निंदा का पात्र बनते हैं।

आप मेरे प्रिय मित्र हैं। आपको सलाह देता हूँ कि आप सपत्निक गया जाकर पितरों के नाम पिंडदान करें तथा गरीबों को खिलाएँ पिलाएँ। भगवान की कृपा और पितरों के आशीर्वाद से सब ढीक हो जाएगा। पहले की तरह आपके घरों खुशहाली लौट आएगी।

भैरव सिंह ने राधेश्याम जी से वादा किया कि आप जैसा कह रहे हैं मैं वैसा ही करुँगा। और फिर दोनों सो गये।।

परिवर्तन

गंगाधर मिश्र! जाने माने ज्योतिषाचार्य और चारो वेदों के ग्याता! अपनी विद्वता के कारण अपने शहर और शहर के बाहर भी चर्चित थे।

किसी बड़े पूजा-पाठ और बड़े-बड़े कंपनियों के प्रोजेक्ट/कार्यशाला निर्माण में कंपनियाँ मिश्र जी से वास्तु सलाह ले लिया करते थे।

मिश्र जी की संतानें भी सरकारी ऊँचे ऊँचे पदों पर कार्यरत थे। मिश्र जी से मिलने नई कंपनी के दो डायरेक्टर मिलने आए। मिश्र जी ने सरल ह्रदय से उनका स्वागत सत्कार किया।

दुनियादारी की बात करते करते कंपनी के एक डायरेक्टर ने नई कंपनी की शुरुआत करने के लिये कोई अच्छा सा मुहूर्त देखने को कहा।

मिश्र जी ने कहा!- आप कह रहे हैं तो आज अंतिम बार मैं पाँचांग देख मुहूर्त बता दे रहा हूँ। आज के समाज में वैदिक रीति रिवाजों का बहुत विरोध हो रहा है। बौधिकता के आभाव में पढ़े लिखे लोग भी पूजा पाठ और प्रकृति के संग रहने को ब्राह्मम्णों की चाल बता रहे हैं। ऐसे मूर्ख समाज से उलझना हमारी मूर्खता कहलाएगी।

परिवर्तन का युग है। रहन, सहन, खान-पान, के साथ समाज में अनेकों परिवर्तन हो रहे। यद्धपि यह परिवर्तन समाज को गर्त में ले जाएगा पर हमें इसी परिवर्तन में अपना वर्जन ढूँढ रहना है।।

मिश्र जी की तार्किक बातों से कंपनी के पदाधिकारी भी निरुत्तर हो चले गये।।

माँ की विदाई

विजया दशमी का त्यौहार देखने और मनाने के लिये नंदगाँव के लोग दस किलोमीटर दूर के शहर में जाते और माँ दुर्गा के विभिन्न पंडालों का दर्शन कर घर लौट आते थे।

सप्तमी से नवमी तक शहर के भीड़ भाड़ में गाँव वाले सलीके से देवी दर्शन कर अपने को धन्य मानते थे। परंतु इस साल गाँव वालों ने एक ग्राम सभा कर खुद के गाँव में विजयादशमी मनाने के लिये माँ दुर्गा का पंडाल और मूर्ति लगाने का विचार किया ताकि बच्चे बूढ़े सभी पूजा का आनंद ले सकें।

गाँव में उत्साह का माहौल बन गया तथा आपसी सहयोग से चंदा भी पर्याप्त हो गया। शहर जाकर मूर्ति का अग्रीम देकर पंडाल डेकोरेटर को भी अग्रीम दे दिया गया।

महालया से आरंभ कर डेकोरेटर ने एक सुंदर सा पंडाल बना दिया। माँ दुर्गा की मूर्ति की प्रतिस्थापना भी समय पर हो गई।

सप्तमी पूजा के दिन पंडाल का पट खुला। माँ दुर्गा के दर्शन होते ही गाँव वालों की आँखों में खुशी के आँसु छलक गये। सप्तमी से नवमी तीन दिन कैसे बीता यह गाँव वालों को पता ही नहीं चला।

रीति अनुसार विजयादशमी को माँ दुर्गा की विदाई कर विसर्जन करने की बारी आई। गाँव वाले सभी जमा हुए और एक पिक अप वैन में माँ की मूर्ति रखी गई।

माँ की विदाई का वेला। सभी गाँव वालों की आँखें नम थीं। भावुकता में तो बहुत सारे लोग रोने भी लगे थे।।

बहुत मुश्किल से माँ के विदाई का यह वक्त गुजरा।।

पलायन

रघु आज सुबह से ही मोटरी और गठरी बाँधने में बैठा था। समय पर उसे ट्रेऩ पकड़नी थी और बाहर के किसी राज्य में काम करने के लिये जाना था। उसके गाँव से बहुत सारे उसके दोस्त भी अपने अपने परिवार के साथ निकल रहे थे।

धान की रोपाई हो चुकी थी तथा अब खेतों के धान में बालियाँ भी आने लगीं थीं। बाकी कटनी छँटनी घर में रह रहे लोग करा लेंगे। बर्षों तक चलने वाली एक ईंट की बड़ी भट्ठी गुजरात में चल रही थी। पहले से परिचित मैनेजर ने रघु को भी परिवार के साथ आने को कहा। अगले बरसात से पहले तक कुछ कमाई कर घर बनाने की योजना थी।

रघु के लिये यह सुनहरा अवसर था। ऐसे भी आठ महीना बैठा बैठी रहेगा। गाँव में रोजगार के साधन नहीं हैं। पैसे की जरूरत हमेशा की रही है। बैठे में घर का खाना खाकर सोने के अलावा क्या है।। रघु यही सोच अब पलायन की बात सोच लिया।

सभी साथी परिवार सहित एक जगह एकत्रित हुए और फिर अपनी रोजगार यात्रा में निकल पड़े।।

अनुष्ठान

पंडित नरोत्तम मिश्रा ने अपने गाँव में प्रतिस्थापित पुराने शिव मंदिर के जीर्णोद्धार का संकल्प ले रखा था। लगातार दो साल तक हुए काम से आज फुर्सत मिली तो गाँव वालों के साथ बैठक कर शिव मंदिर के जीर्णोद्धार और नवीकरण पर इस साल के शिवरात्रि पर एक सप्ताह तक शिव चर्चा का अनुष्ठान भी कराने का सोच लिया।

नरोत्तम मिश्रा ने अपनी बात गाँव वालों के बीच रखा। गाँव वालों में भी शिव चर्चा को लेकर काफी खुशियाँ दिखीं। शिव रात्रि के आने से एक सप्ताह पूर्व शिवचर्चा प्रारम्भ हुई और शिवरात्रि के दिन समाप्ति। गाँव वालों में एक नये उत्साह को देखा गया।

नरोत्तम मिश्रा के अथक प्रयास और शिव कृपा से अब हर साल शिव चर्चा और शिवरात्रि की पूजा अनुष्ठान विर्विघ्न रुप से उस गाँव में संपन्न होने लगा।

सहनशीलता

आदित्यनाथ जी अपनी सरकारी सेवा शिक्षक से सेवानिवृत्त हो परिवार के साथ घर में आराम से रहने लगे।। सुख सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी।। दो बेटे थे, दोनों ही नेशनल बैंक में काम करते थे।। आदित्यनाथ जी को आगे की कोई चिंता शेष नहीं रह गई थी।

वह चाहते थे कि बेटे बहुओं के बीच रहकर संयुक्त परिवार की जैसी जिंदगी बसर करें,परन्तु उनकी छोटी बहू मालती बहुत कर्कश स्वभाव की औऱ घर को तोड़ चलने की साजिश रचती रहती थी। आये दिन कोई न कोई बहाने से सास -स्वसुर को ताने मारना औऱ बेवजह कलह करना उसकी आदत थी। वह चाहती थी कि मेरी प्रताड़ना और शब्द बाण से मुझे कोई अलग रहने को कह दें तो मैं अपने पतिदेव के साथ अलग फ्लैट लेकर रह जाऊँगी।।

चूंकि मालती को अपने महिला मित्रों से बाहर घूमने तथा किट्टी पार्टी करने की शौक जो हो गई थी। आदित्यनाथ इस पर रोक लगाते रहते थे।। मालती के लाख बुराई की बात औऱ मालती से होने वाले अपमान को आदित्यनाथ सह चला करते रहे। इसलिये कि परिवार न टूटे।।

आदित्यनाथ जी की यही सहनशीलता घर को एक सूत्र में बांधे रखा था।।

ईश्वर की माया भी गजब है कहिये। एक दिन ऑफिस से लौटने के क्रम में आदित्यनाथ जी के छोटे बेटे राहुल का एक्सीडेंट हो गया औऱ लोग उसे शहर के ही अस्पताल में भर्ती कराकर राहुल के पिता आदित्यनाथ जी को खबर कर दिया गया।।

अचानक आई इस बुरी खबर से सबमें बदहवासी छा गई। सभी हॉस्पिटल की ओर दौड़े। मालती को तो मानो साँप सूंघ गया।। खैर इलाज आरम्भ हो चुका था तथा राहुल की जान खतरे से बाहर था।। आदित्यनाथ जी और राहुल की माँ हॉस्पिटल में ही डेरा जमा दिए जब तक की राहुल स्वस्थ हो घर नहीं आया।।

मालती को भी एहसास हो गया कि संयुक्त परिवार का मतलब ही परिवार है और अनावश्यक विवाद में सहनशीलता ही परिवार को टूटने से बचाता है।। आदित्यनाथ जी की यही सहनशीलता वाली आदत आज फिर नया संदेश दे गया।।

विडंबना

दीनानाथ एक सरकारी सेवा निवृत्त शिक्षक। अपनी पत्नी प्रेमलता से अपने घर के बाहर बगीचे में कुर्सी लगाकर बैठे थे और अपने जीवन की घटित घटनाओं को मिलकर चर्चा करने में मशगूल थे।।

दीनानाथ जी के कोई संतान नहीं रहने से उन्होंने अपने छोटे भाई के दो पुत्र में से एक पुत्र को गोद लेकर पढ़ा लिखाकर आगे बढ़ा दिए।

आज वही पोषपुत्र रोहित इंजीनियर बनकर किसी बड़ी कंपनी में काम करने लगा था।।

दीनानाथ ने जो संस्कार रोहित को दिए थे उसे भूलकर कलियुगी पुत्र रोहित ने भुला दिया और अपने माँ-बाप के विचार से विपरीत लव मैरिज कर एक बड़ी सिटी में फ्लैट लेकर रहने लगा।।

आज की तारीख में रोहित अपने इन माँ-बाप को ही भूलकर अपनी दुनिया में रहने लगा।।

इन्हीं सब बातों को लेकर दीनानाथ के अन्तर्द्वन्द मन से जो बात निकली उसे अपनी पत्नी प्रेमलता को कहा--हमारी यही विडंबना है कि हमारा कोई संतान हुआ नहीं और यह रोहित भाई पुत्र होकर भी हमारा नहीं हुआ।।

गैर होने का इससे बड़ा और क्या प्रमाण है कि आज हमसे बात भी नहीं करता।। अपनी यह विडंबना किसे सुनाएँ।।

प्रेमलता को यह बात बोलकर फिर दीनानाथ ऊपर शून्य की ओर ताकने लगे।।

होली का हुड़दंग

गोलू को होली में खेलने वाले रंगों से बहुत डर लगता था। बचपन से ही वह होली के दिन घर से बाहर नहीं निकलता था।।

गोलू के दोस्तों में बहुत ऐसे लड़के भी थे जो मोबिल तेल, और कांच मिश्रित अबीर गुलाल का प्रयोग कर त्वचा को जला देने जैसे रंगों का प्रयोग करते थे।।

गोलू उनके उपरोक्त बूरे लक्षणों से परिचित था और यही भय उसे होली जैसे खुशहाली और भाईचारे वाला त्यौहार से दूर कर रखा था।।

दूसरी ओर गोलू के दोस्त गोलू को अपनी टोली में रख रंग-अबीर खेलना चाहते थे।। परन्तु इस बार गोलू ने भी संकल्प कर लिया कि वह भी होली के हुड़दंग में शामिल होगा। कब तक दोस्तों को निराश करेगा।।

होली के दिन के सुबह का समय दूसरे मोहल्ले में हुड़दंग शुरु हो चुका था और गोलू के दोस्त भी गोलू को लेने आ गए।।

पहली बार ही सही पर इस साल की होली गोलू के लिये बहुत अच्छा रहा।। दोस्तों और मुहल्ले वालों से मिल होली के हुड़दंग में शामिल हुआ।।

भाईचारे और अपनत्व की इस होली का क्या अर्थ है इसे गोलू समझ चुका था तथा आगे से हर साल को होली को नियमित रुप से मनाने का संकल्प लिया।।

अनुभूति

रमाशंकर जी को अपनी पुत्री उर्वशी की शादी करने की चिंता सता रही थी। रमाशंकर जो एक सरकारी शिक्षक और सेवा के मात्र एक साल शेष रह गये थे। रमाशंकर जी चाहते थे कि सरकारी सेवा में रहते वे अपनी एकलौती पुत्री की शादी कर दें।

बहुत प्रयास के बाद भी कोई ऐसा लड़का मिल नहीं रहा था जिससे वो उर्वशी की शादी उससे कर दें।कहीं लड़का पसंद तो लड़के का घर परिवार पसंद नहीं। कहीं घर परिवार पसंद तो लड़का पसंद नहीं। लाचार रमाशंकर जी भगवान के भरोसे रह एक सुयोग्य लड़के की तलाश कर रहे थे।

दूसरी ओर उर्वशी यू0पी0 एस0 सी0 की तैयारी में लगी थी और दिल्ली में रह रही थी। पहली बार की यू0पी0एस0सी0परीक्षा में बहुत थोड़े अंकों से पिछड़ गई थी। इस वर्ष की परीक्षा में उर्वशी एक जोर की उम्मीद लेकर तैयारी में जुटी रही। उर्वशी को भी मालूम था कि उसके पिता उसकी शादी के लिये चिंता कर रहे हैं पर उर्वशी जिद्द में थी कि वह यू0/पी0/एस0/सी0 सफल होने के बाद ही कुछ सोचेगी।

उर्वशी का दोस्त रोहित भी यू0/पी0/एस0/सी0 की तैयारी में लगा था और उर्वशी से मिलकर दोनों दिल्ली में कोचिंग करते थे। bएक दूसरे में बहुत लगाव था और सच कहूँ तो दोनों एक दूसरे को चाहने भी लगे थे। पर भविष्य का लक्ष्य यू0 पी0 एस0 सी0 क्लीयर करना था।महीनों बाद वह वक्त भी आया जब यू0 पी0 एस0 सी0 की परीक्षा देकर दोनों अपने-अपने घर लौटे। कुछ महीनों बाद यू0 पी0 एस0 सी0 का रिजल्ट आया तो उर्वशी की खुशी का ठिकाना न रहा। उर्वशी और रोहित दोनों ने यू0 पी0 एस0 सी0 क्लीयर कर लिया। रमाशंकर जी भी आनंदित हुए।

उर्वशी और रोहित दोनों की पोष्टिंग ट्रेनी अफसर के रूप में पहले हुई। ट्रेनिंग के दौरान रोहित ने उर्वशी को अपने दिल की बात कही। उर्वशी भी यही चाहती थी कि रोहित उसका जीवन साथी बने। दोनों ने अपनी सहमती जताई फिर एक मंदिर में गंदर्भ विवाह कर लिया। उर्वशी ने अपने पिता रमाशंकर को रोहित से हुई शादी की सूचना दूरभाष से दे दिया। दरमाशंकर को रोहित और उर्वशी को लेकर जो अनुभूति थी वही हुआ। पर रमाशंकर जी बहुत खुश हुए।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का... आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

नाम- डॉ. अजय किशोर नाथ पाण्डेय 'बेबस'

पिता- स्व. द्वारिकानाथ पाण्डेय

जन्मतिथि- 12 जनवरी 1962

शिक्षा - बी0 ए0 (आनर्स)

विद्या - कहानी, कविता, गीत-गजल, शेर आदि लेखन कार्य के अतिरिक्त पेंटिंग, तथा सामाजिक कार्य में रुचि, छंद मुक्त रचना के प्रति अभिरुचि।

सम्मान- पेंटिंग एवं लेखन में कई संस्थाओं के साथ राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त।

उपलब्धि- 10 से अधिक एकल संग्रह एवं साझा संग्रह प्रकाशित, जिला एवं राज्य स्तरिय कार्यक्रमों मे जज की भूमिका। नागपुरी की कविताऐं स्कुल एवं कालेज के पाठ्यक्रमों में शामिल।

पता- चेटर, पोस्ट-जिला -गुमला

झारखंड, पिन 835207

व्हाट्सअप मो0 नं0 91101950180

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-94528-52-9

मूल्य- 320/-

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com